

माधवः॥६०॥ उवाच स्वामिनं रात्रौ शरीरं कीदृशं स्थितम्। तच्छ्रुत्वा श्रीधरस्वामि प्राहेदं भाषसे किम्॥६१॥ रात्रावन्नादिदानेन जीवितोऽहं त्वया पुनः। किमिदं प्रोच्यते सर्वमज्ञातमिव सर्वथा॥६२॥ इत्युक्तो माधवः प्राह स्वामिन्नाहं त्वदन्तिके। रात्रावागतवानत्र सत्यमेतन्न संशयः॥६३॥ इति श्रुत्वा ततः स्वामी निश्चिकाय स्वमानसे। विन्दुमाधव एवासौ मम रक्षार्थमागतः॥६४॥ अन्यथा मृतिरेव स्याद्रात्रावन्नं भवेन्न चेत्। तदारभ्य ततः स्वामी शरीरेण बलेन च॥६५॥ पुपोष रोगनिर्मुक्तो विनापथ्यौषधैरपि। माधवो रात्रिवृत्तान्तं काशीवासिजनेषु च॥६६॥ संश्राव्य स्वामिसेवायां निरतोभूदहर्निशम्। इत्येवं वन्दितं लोके श्रीधरस्वामिचेष्टितम्॥६७॥ श्रुत्वैतत्परमाख्यानं कृष्णे भक्ति लभेन्नरः॥६८॥

* विभिन्न कामनाओं से भिन्न-भिन्न दिनों में भागवत-पारायण की विधि *

यदि एक दिन में सम्पूर्ण भागवत का पारायण करना हो, तो श्रीशुकाचार्य के मत से श्रावणकृष्णपक्ष में भागवत-प्रेमियों को प्रारम्भ से समाप्ति तक करना चाहिये। इसमें तिथि अपेक्षित नहीं है। आचार्य त्रय्यारुणि के मत से २ दिन का पारायण करनेवाले मनुष्य को श्रावणशुक्लपक्ष में पहले दिन प्रथमस्कन्ध में प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से नवम् स्कन्ध के १३ अध्याय के अन्त तक कुल १९० अध्याय तक का पारायण करना चाहिये तथा दूसरे दिन नवम् स्कन्ध के १४वें अध्याय के प्रथम श्लोक से १२वें स्कन्ध के १३वें अध्याय के अन्त तक कुल १४५ अध्याय का पारायण करना चाहिये। आचार्य हारीत के मत से तीन दिन में पारायण करनेवाले मुक्ति के इच्छुक पुरुषों को आश्विनशुक्लपक्ष में पहले दिन प्रथम स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से सप्तम् स्कन्ध के १५वें अध्याय के अन्त तक कुल १५३ अध्याय, दूसरे दिन सप्तम स्कन्ध के १६ वें अध्याय के प्रथम श्लोक से दशम स्कन्ध के नवम अध्याय के अन्त तक कुल १३८ अध्याय तथा तीसरे दिन दशम स्कन्ध के दशम अध्याय के प्रथम श्लोक से १२वें स्कन्ध के १३वें अध्याय के अन्त तक कुल ९४ अध्यायों का पारायण करना चाहिये। सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि के लिये आचार्य शौनक के मत से चार दिन में पारायण करनेवाले पुरुष को भाद्रपद शुक्लपक्ष में पहले दिन प्रथम स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से चतुर्थ स्कन्ध के २३वें अध्याय के अन्त तक कुल ८१ अध्याय, दूसरे दिन चतुर्थ स्कन्ध के २४ वें अध्याय के प्रथम श्लोक से अष्टम स्कन्ध के १७ वें अध्याय के अन्त तक कुल ८९ अध्याय, तीसरे दिन अष्टम स्कन्ध के १८वें अध्याय के प्रथम श्लोक से दशम स्कन्ध के ५२वें अध्याय के अन्त तक कुल ८३ अध्याय और चौथे दिन दशम स्कन्ध के ५३वें अध्याय के प्रथम श्लोक से १२वें स्कन्ध के १३वें अध्याय के अन्त तक कुल ८२ अध्याय पारायण करना चाहिये। सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि के लिये आचार्य अकृतव्रण के मत से पाँच दिन में पारायण करनेवाले पुरुषों को भाद्रपद शुक्लपक्ष में पहले दिन प्रथम स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से चतुर्थ स्कन्ध के ७वें अध्याय के अन्त तक कुल ६९ अध्याय, दूसरे दिन चतुर्थ स्कन्ध के ८वें अध्याय के प्रथम श्लोक से षष्ठ स्कन्ध के १९वें अध्याय के अन्त तक कुल ६९ अध्याय, तीसरे दिन षष्ठ स्कन्ध के २०वें अध्याय के प्रथम श्लोक से नवम स्कन्ध के २४वें अध्याय के अन्त तक कुल ६३ अध्याय, चौथे दिन दशम स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से दशम स्कन्ध के ६९ वें अध्याय के अन्त तक कुल ६९ अध्याय तथा पाँचवे दिन दशम स्कन्ध के ७० वें अध्याय के प्रथम श्लोक से १२ वें स्कन्ध के १३वें अध्याय के अन्त तक कुल ६५ अध्याय पारायण करना चाहिये। धनप्राप्ति के लिये आचार्य सांख्यायन के मत से ६ दिन में पारायण करनेवाले पुरुषों को भाद्रपद कृष्णपक्ष में पहले दिन प्रथम स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से तीसरे स्कन्ध के ३२ वें अध्याय के अन्त तक कुल ६१ अध्याय, दूसरे दिन तृतीय स्कन्ध के ३३ वें अध्याय के प्रथम श्लोक से ५वें स्कन्ध के १४वें अध्याय के अन्त तक कुल ६६ अध्याय, तीसरे दिन पंचम स्कन्ध के १५वें अध्याय के प्रथम श्लोक से अष्टम स्कन्ध के २४वें अध्याय के अन्त तक कुल ७० अध्याय, चौथे दिन नवम स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से दशम स्कन्ध के ३९ वें अध्याय के अन्त तक कुल ६३ अध्याय पाँचवें दिन दशम स्कन्ध के ४०वें अध्याय के प्रथम श्लोक से ११ वें स्कन्ध

के १९वें अध्याय के अन्त तक कुल ७० अध्याय तथा छठें दिन ११वें स्कन्ध के २०वें अध्याय के प्रथम श्लोक से १२वें स्कन्ध के १३वें अध्याय के अन्त तक कुल २५ अध्याय पारायण करना चाहिये (१) धन-प्राप्ति के लिये आचार्य सांख्यायन के मत से सात दिन में पारायण करनेवाले पुरुषों को भाद्रपद कृष्णपक्ष में पहले दिन प्रथम स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से चतुर्थ स्कन्ध के नवम अध्याय के अन्त तक कुल ७१ अध्याय, दूसरे दिन चतुर्थ स्कन्ध दशम अध्याय के प्रथम श्लोक से षष्ठ स्कन्ध के १३वें अध्याय के अन्त तक कुल ६१ अध्याय, तीसरे दिन षष्ठ स्कन्ध के १४वें अध्याय के प्रथम श्लोक से नवम स्कन्ध के ७वें अध्याय के अन्त तक कुल ५२ अध्याय, चौथे दिन नवम स्कन्ध के ८वें अध्याय के प्रथम श्लोक से दशम स्कन्ध के ३४वें अध्याय के अन्त तक कुल ५१ अध्याय, पाँचवें दिन दशम स्कन्ध के ३५वें अध्याय के प्रथम श्लोक से ७३वें अध्याय के अन्त तक कुल ३९ अध्याय, छठे दिन दशम स्कन्ध के ७४वें अध्याय के प्रथम श्लोक से ९०वें अध्याय के अन्त तक कुल १७ अध्याय तथा सातवें दिन ग्यारहवें स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से बारहवें स्कन्ध के तेरहवें अध्याय के अन्त तक कुल ४४ अध्याय का पारायण करना चाहिये। (२) पुत्र-प्राप्ति की कामना से श्रीवसिष्ठ मुनि के मत से ७ दिन में पारायण करनेवाले पुरुषों को वैसाखमास में पहले दिन प्रथम स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से तृतीय स्कन्ध के २४वें अध्याय के अन्त तक कुल ५३ अध्याय, दूसरे दिन तृतीय स्कन्ध के २५वें अध्याय के प्रथम श्लोक से पंचम स्कन्ध के तीसरे अध्याय के अन्त तक कुल ४३ अध्याय, तीसरे दिन पंचम स्कन्ध के चतुर्थ अध्याय के प्रथम श्लोक से सप्तम स्कन्ध के ८वें अध्याय के अन्त तक कुल ५० अध्याय, चौथे दिन सप्तम स्कन्ध के नवम अध्याय के प्रथम श्लोक से दशम स्कन्ध के चतुर्थ अध्याय के अन्त तक कुल ५९ अध्याय, ५वें दिन दशम स्कन्ध के पंचम अध्याय के प्रथम श्लोक से दशम स्कन्ध के ५५वें अध्याय के अन्त तक कुल ५१ अध्याय, ६वें दिन दशम स्कन्ध के ५६वें अध्याय के प्रथम श्लोक से ११वें स्कन्ध के छठें अध्याय के अन्त तक कुल ४१ अध्याय और ७वें दिन ११वें स्कन्ध के ७वें अध्याय के प्रथम श्लोक से १२वें स्कन्ध के १३वें अध्याय के अन्त तक कुल ३८ अध्याय पारायण करना चाहिये (३) श्रीसूतजी के मत से निष्काम ७ दिन पारायण करनेवाले पुरुषों को कार्तिक शुक्ल पक्ष में पहले दिन प्रथम स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से तृतीय स्कन्ध के १०वें अध्याय के अन्त तक कुल ४९ अध्याय, दूसरे दिन तृतीय स्कन्ध के ११वें अध्याय के प्रथम श्लोक से पंचम स्कन्ध के २३वें अध्याय के अन्त तक कुल ६७ अध्याय, तीसरे दिन पंचम स्कन्ध के २४वें अध्याय के प्रथम श्लोक से सप्तम स्कन्ध के १५वें अध्याय के अन्त तक कुल २७ अध्याय, चतुर्थ दिन अष्टम स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से नवम स्कन्ध के २४वें अध्याय के अन्त तक कुल ४८ अध्याय, ५वें दिन दशम स्कन्ध के प्रारम्भ से ४२वें अध्याय के अन्त तक कुल ४२ अध्याय, ६ठें दिन दशम स्कन्ध के ४३वें अध्याय के प्रथम श्लोक से दशम स्कन्ध के ९० अध्याय के अन्त तक कुल ४८ अध्याय और सातवें दिन ११वें स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से १२वें स्कन्ध के १३वें अध्याय के अन्त तक कुल ४४ अध्याय का पारायण करना चाहिये। (४) श्रीविश्वामित्र के मत से सङ्कटमोचनार्थ ७ दिन में पारायण करनेवाले पुरुषों को मार्गशीर्ष मास में पहले दिन प्रथम स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से द्वितीय स्कन्ध के दसवें अध्याय के अन्त तक कुल २९ अध्याय, दूसरे दिन तृतीय स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से चतुर्थ स्कन्ध के ३१ अध्याय के अन्त तक कुल ६४ अध्याय, तीसरे दिन पंचम स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से षष्ठ स्कन्ध के १९वें अध्याय तक कुल ४५ अध्याय, चौथे दिन सप्तम स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से अष्टम स्कन्ध के २४वें अध्याय तक कुल ३९ अध्याय, पाँचवें दिन नवम स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से १०वें स्कन्ध के ४९वें अध्याय के अन्त तक कुल ७३ अध्याय, ६ठें दिन दशम स्कन्ध के ५०वें अध्याय के प्रथम श्लोक से ११वें स्कन्ध के ३१वें अध्याय के अन्त तक कुल ७२ अध्याय और ७वें दिन १२वें स्कन्ध के प्रारम्भ से अन्त तक कुल १३ अध्याय का पारायण करना चाहिये। (५) श्रीजामदग्नि के मत से विष को नष्ट करने की कामना से ७ दिन में पारायण करनेवाले पुरुषों को पौषमास में पहले दिन प्रथम स्कन्ध के प्रारम्भ से तृतीय स्कन्ध के १९वें

अध्याय के अन्त तक कुल ४८ अध्याय, दूसरे दिन तृतीय स्कन्ध के बीसवें अध्याय के प्रथम श्लोक से पंचम स्कन्ध के ६ठें अध्याय के अन्त तक कुल ५१ अध्याय, तीसरे दिन पंचम स्कन्ध के ७वें अध्याय के प्रथम श्लोक से सप्तम स्कन्ध के १०वें अध्याय के अन्त तक कुल ३९ अध्याय, चतुर्थ दिन सप्तम स्कन्ध के ११वें अध्याय के प्रारम्भ से नवम स्कन्ध के २४वें अध्याय के अन्त तक कुल ५३ अध्याय, ५वें दिन दशम स्कन्ध के प्रारम्भ से ४९वें अध्याय के अन्त तक कुल ४९ अध्याय, छठे दिन दशम स्कन्ध के ५०वें अध्याय के प्रारम्भ से ९० अध्याय के कुल ४१ अध्याय और ७वें दिन ११वें स्कन्ध के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक से १२वें स्कन्ध के १३वें अध्याय तक कुल ४४ अध्याय का पारायण करना चाहिये। (६) बन्धन से छूटने की इच्छा से भारद्वाज मुनि के मत से ७ दिन में पारायण करनेवाले पुरुषों को माघ मास में पहले दिन प्रथम स्कन्ध के प्रारम्भ से तृतीय स्कन्ध के ३३वें अध्याय के अन्त तक कुल ६२ अध्याय, दूसरे दिन चतुर्थ स्कन्ध के प्रारम्भ से पंचम स्कन्ध के २६ अध्याय के अन्त तक कुल ५७ अध्याय, तीसरे दिन षष्ठ स्कन्ध के प्रारम्भ से सप्तम स्कन्ध के १५वें अध्याय के अन्त तक कुल ३४ अध्याय, चतुर्थ दिन अष्टम स्कन्ध के प्रारम्भ से नवम के २४वें अध्याय के अन्त तक कुल ४८ अध्याय, ५वें दिन दशम स्कन्ध के प्रारम्भ से ९० अध्याय के अन्त तक कुल ९० अध्याय, ६ठें दिन १०वें स्कन्ध के प्रारम्भ से अन्त तक कुल ३१ अध्याय, ७वें दिन १२वें स्कन्ध के प्रारम्भ से १३वें अध्याय के अन्त तक कुल १३ अध्याय का पारायण करना चाहिये। (७) शत्रु को पराजित करने के लिये गौतममुनि के मत से ७ दिन में पारायण करनेवाले पुरुषों को फाल्गुन मास में पहले दिन प्रथम स्कन्ध के प्रारम्भ से तृतीय स्कन्ध के १९वें अध्याय के अन्त तक कुल ४८ अध्याय, दूसरे दिन तृतीय स्कन्ध के २०वें अध्याय के प्रारम्भ से पंचम स्कन्ध के १५वें अध्याय के अन्त तक कुल ६० अध्याय, तीसरे दिन पंचम स्कन्ध के १६वें अध्याय के प्रारम्भ से सप्तम स्कन्ध के १६ वें अध्याय के अन्त तक कुल ४५ अध्याय, चतुर्थ दिन अष्टम स्कन्ध के प्रारम्भ से १०वें स्कन्ध के १२वें अध्याय के अन्त तक कुल ६० अध्याय, ५वें दिन दशम स्कन्ध के १३ अध्याय के प्रारम्भ से दशम स्कन्ध के ८४वें अध्याय के अन्त तक कुल ७२ अध्याय, ६ठें दिन दशम स्कन्ध के ८५ अध्याय के प्रारम्भ से ११वें स्कन्ध के ३१ अध्याय के अन्त तक कुल ३७ अध्याय और ७वें दिन १२वें स्कन्ध के प्रारम्भ से १३वें अध्याय के अन्त तक कुल १३ अध्याय का पारायण करना चाहिये। (८) रोगों से छुटकारा पाने के लिये अत्रिमुनि के मत से ७ दिन में पारायण करनेवाले पुरुषों को चैत्रमास में पहले दिन प्रथम स्कन्ध के प्रारम्भ से तृतीय स्कन्ध के २० अध्याय के अन्त तक कुल ४९ अध्याय, दूसरे दिन तृतीय स्कन्ध के २१ अध्याय के प्रारम्भ से पंचम स्कन्ध के षष्ठ अध्याय के अन्त तक कुल ५० अध्याय, तीसरे दिन पंचम स्कन्ध के सप्तम अध्याय के प्रारम्भ से षष्ठ स्कन्ध के १९ अध्याय के अन्त तक कुल ३९ अध्याय, चौथे दिन सप्तम स्कन्ध के प्रारम्भ से नवम स्कन्ध के २०वें अध्याय के अन्त तक कुल ५९ अध्याय पाँचवें दिन नवम स्कन्ध के २१वें अध्याय के प्रारम्भ से दशम स्कन्ध के ३५ अध्याय के अन्त तक कुल ३९ अध्याय छठे दिन दशम स्कन्ध के ३९वें अध्याय के प्रारम्भ से १०वें स्कन्ध के ६ठें अध्याय के अन्त तक कुल ६१ अध्याय और ७वें दिन ११वें स्कन्ध के ७वें अध्याय के प्रारम्भ से १२वें स्कन्ध के १५ अध्याय के अन्त तक कुल ३८ अध्याय का पारायण करना चाहिये। (९) राज्यप्राप्ति की कामना से श्रीकश्यपमुनि के मत से १० दिन में पारायण करनेवाले पुरुषों को आषाढ़ शुक्लपक्ष में पहले दिन प्रथम स्कन्ध के प्रारम्भ से तृतीय स्कन्ध के छठे अध्याय के अन्त तक कुल ३५ अध्याय दूसरे दिन तृतीय स्कन्ध के सप्तम अध्याय के प्रारम्भ से चतुर्थ स्कन्ध के ७वें अध्याय के अन्त तक कुल ३४ अध्याय, तीसरे दिन चौथे स्कन्ध के आठवें अध्याय के प्रारम्भ से पंचम स्कन्ध के नवम अध्याय तक कुल ३३ अध्याय, चतुर्थ दिन पंचम स्कन्ध के दसवें अध्याय के प्रारम्भ से षष्ठ स्कन्ध के १९ अध्याय के अन्त तक कुल ३६ अध्याय ५वें दिन सप्तम स्कन्ध के प्रारम्भ से अष्टम स्कन्ध के २४ अध्याय के अन्त तक कुल ३९ अध्याय, छठे दिन नवम स्कन्ध के प्रारम्भ से १०वें स्कन्ध के ११वें अध्याय के अन्त तक कुल ३५ अध्याय, ७वें दिन १०वें अध्याय के प्रारम्भ से दशम स्कन्ध के ४५वें अध्याय के अन्त तक कुल ३४ अध्याय, ८वें दिन दशम स्कन्ध के ४६वें अध्याय के प्रारम्भ से दशम स्कन्ध के

६४७

से ३०वें अध्याय के अन्त तक कुल १३ अध्याय, २२ वें दिन ३१ वें अध्याय के प्रारम्भ से ४२वें अध्याय के अन्त तक कुल १२ अध्याय, २३वें दिन ४३वें अध्याय के प्रारम्भ से ५४वें अध्याय के अन्त तक कुल १२ अध्याय, २४वें दिन ५५वें अध्याय के प्रारम्भ से ६५ वें अध्याय के अन्त तक कुल ११ अध्याय, २५वें दिन ६६वें अध्याय के प्रारम्भ से ७८ वें अध्याय के अन्त तक कुल १३ अध्याय, २६वें दिन ७९ वें अध्याय के प्रारम्भ से ८७ अध्याय के अन्त तक कुल ९ अध्याय, २७ वें दिन दशम स्कन्ध के ८८ वें अध्याय के प्रारम्भ से ११वें स्कन्ध के नवम अध्याय के अन्त तक कुल १२ अध्याय, २८वें दिन १०वें अध्याय के प्रारम्भ से २१वें अध्याय के अन्त तक कुल १२ अध्याय, २९ वें दिन २२वें अध्याय के आरम्भ से १२वें स्कन्ध के दूसरे अध्याय तक कुल १२ अध्याय तथा ३० वें दिन तीसरे अध्याय के आरम्भ से १३वें अध्याय के अन्त तक कुल १३ अध्याय का पारायण करना चाहिये। कृष्णपक्ष के आदि में आरम्भ और शुक्लपक्ष के अन्त में समाप्ति करना चाहिये अथवा शुक्लपक्ष के अन्त में आरम्भ और कृष्णपक्ष में समाप्त करना चाहिये। इसी तरह दो महीने, छः महीने और साल भर में समाप्त होनेवाले भी पारायण करने चाहिये। दूसरे आचार्यों के मत से मासपारायण करनेवाले को वैशाख शुक्ल पञ्चमी को प्रारम्भ और ज्येष्ठ कृष्ण पञ्चमी को समाप्त करना चाहिये।

पारायण के अन्य भेद—(क) पन्द्रह दिन में पाठ करनेवाले प्रतिदिन २२ अध्याय का पाठ करें, इस प्रकार १४ दिन तक कर पन्द्रहवें दिन २७ अध्याय का पाठ करें। (ख) अठारह दिन में—१-१९, २-१८, ३-१७, ४-१६, ५-१५, ६-१४, ७-१३, ८-१२, ९-११, १०-१०, ११-९, १२-८, १३-७, १४-६, १५-५, १६-४, १७-३, १८-२, १९-१, २०-० इस तरह कुल ३३५ अध्याय का पाठ करें। (ग) इक्कीस दिन में प्रतिदिन १६ अध्याय का पाठ करें। समाप्ति के रोज १५ अध्याय का पाठ करें या इच्छानुसार ही करें। इस में स्कन्ध के आदि और अन्त के श्लोक द्विरावृत्ति से पढ़ना चाहिये भागवतप्रदीप।

श्रीमद्भागवत महापुराण का अनुष्ठान प्रकार

अथ प्रयोगान् वक्ष्यामि भागवतात् शिवभाषितान्। येषां विज्ञानमात्रेण साधवः सिद्धिमाप्नुयात्॥ (१) मासपारायण और पक्षपारायण—गायत्रीमन्त्र से ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ क्षत्रिय के लिये—ओं देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपति भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतत्रः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु॥ (शु० य० ११/७)। वैश्य के लिये—ओं विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते कविः प्रासावीद् भद्रं द्विपदे चतुष्पदे। वि नाकमख्यत्सविता वरेण्योऽनु प्रयाणमुषसो व्विराजति॥ (शु० य० १२/३) से सम्पुट करने से सब कामनायें सिद्ध होती हैं और अन्त में उन्हें मोक्ष भी मिलता है (२) आरोग्य कामना वाले (मृत्युञ्जयमन्त्र के) मृत्युञ्जयस्त्रिधा प्रोक्तः आद्यो मृत्युञ्जयस्मृतः। मृतसञ्जीवनी चैव महामृत्युञ्जयस्तथा। मृत्युञ्जयः केवलः स्यात्पुटितो व्याहृतित्रयः। अनुष्ठानप्रकाश। १-ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः ओं त्र्यम्बकं से ओं स्वः ओं भुवः ओं भूः इत्यष्टाचत्वारिंशद्वर्णात्मकः केवलमृत्युञ्जयमन्त्रः। २-ओं हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ओं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिर्मुष्टिर्वर्धनं उर्वारुक्मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ओं स्वः भुवः भूः ओं सः हौं ओं इति ५२ द्विपञ्चाशद्वर्णात्मको मृतसञ्जीवनीमन्त्रः। ओं हौं ओं जूं ओं सः ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः ओं त्र्यम्बकं ० ओं स्वः ओं भुवः ॐ भूः ओं सः ओं जूं ओं हौं ओं स्वाहा इति द्विषष्टि ६२-वर्णात्मको महामृत्युञ्जयः शुक्राराधितः। अभिचारे ज्वरे तीव्रे घोरोन्मादे शिरोगदे। असाध्यरोगक्ष्वेडादौ महादाहे महाभये। अपमृत्युजिदेषः स्यादायुरारोग्यवर्धनः॥ 'ग्रहपीडासु सर्वासु महागदनिपीडनेः। वियोगे बान्धवानां च जनमार उपस्थिते॥ राज्यभंगे धनग्लानौ क्षिप्रमृत्युविनाशने। अभियोगे समुत्पन्ने मनोधर्मविपर्यये॥ मृत्युञ्जयस्य देवस्य विधानं क्रियते बुधैः। राष्ट्रभङ्गे जनक्लेशे महारोगनिपीडने॥ कोटिसङ्ख्यजपः प्रोक्तो मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥ अनुष्ठान प्र०। सामान्यगदपीडायां दुष्टस्वप्नस्य दर्शने। मृत्युञ्जयस्य मन्त्रस्य जपो लक्षमितः शुभः॥ अपमृत्युविनाशाय जपोऽयुतमितः स्मृतः। दुर्वार्ता श्रवणे जाप्ये सुहृदामनृते क्षुते।

यात्रायामयुतं कार्यं सहस्रं वा समाहितैः॥ विधानमाला। ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ इति षट्प्रणव मृत्युञ्जयमन्त्रः। ॐ हौं जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे ॐ स्वः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ हौं ॐ चतुर्दशप्रणवयुक्तः। (ब्रह्मकर्मसमुच्चय) प्रयोग से सिद्धि होती है। और जो ॐ हौं जूं सः-इस व्याहृति से सम्पुट करता है उसको भी मन्त्र की सिद्धि मिलती है। (३) पुत्रकामना वाले—सन्तानगोपाल (ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥) मन्त्र से भागवत के प्रत्येक श्लोक से सम्पुट करें या कृष्णजन्म से दशमस्कन्ध प्रथम अध्याय, द्वितीय अध्याय या तृतीयाध्याय से प्रारम्भकर नवमस्कन्ध पर्यन्त पाठ करें। (४) शत्रुकामनावाले—ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो नीदहाति वेदः। सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुर्दुरितात्यग्निः॥ इस मन्त्र से भागवत के प्रत्येक श्लोक से संपुट करें। (५) मासपारायणवाले—ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने। प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः॥' इस मन्त्र से सम्पुट करें तो भगवान् कृष्ण में प्रेम बढ़ता है और उन्हें ज्ञान भी होता है। (६) सृष्टिक्रम, स्थितिक्रम और संहारक्रम* (प्रथमस्कन्ध से द्वादशस्कन्धपर्यन्त क्रम का नाम सृष्टिक्रम है। कृष्णजन्म से प्रारम्भकर अन्त में नवमस्कन्ध का पाठ करें उसको स्थितिक्रम कहते हैं अध्याय के विलोम-(अर्थात् द्वादशस्कन्ध के अन्तिम अध्याय से पाठ करना संहार है) से पाठ करनेवाले सब उत्कट आपत्तियों से मुक्त हो जाते हैं। (७) ॐ गोविन्द द्वारकावासिन् कृष्ण दामोदर प्रियः। कौरवार्णवमग्नानां किं न जानासि केशव॥" इस मन्त्र से सम्पुट करनेवाले शत्रुबाधारूप विपत्तियों से छूट जाते हैं। (८) एतस्य श्रवणे प्रोक्तं चतुर्धा मुनिसत्तमैः। सात्त्विकं राजसं चैव तामसं निर्गुणं तथा॥ सप्ताहं राजसं प्रोक्तं तामसं सालसन्तु यत्। सात्त्विकं चैकविंशाहं तथैवाष्टादशाहकम्॥ तथा पञ्चादशाहं च नियतं निर्गुणं स्मृतम्। राजसे त्वर्थसङ्कोचस्तामसे स्मृतिविभ्रमः॥ सात्त्विकं सुखबोधाय निर्गुणं सर्वतो वरम्। सात्त्विकश्रवणेनैव बहवो लेभिरे गतिम्॥ 'सप्ताहं राजसं प्रोक्तं शक्तित्वाद् बहुपूजनैः। मासर्तुना वा विंशाहैरेकद्वयैः सात्त्विकं शुभम्॥ सालसानन्ददेहत्वादथ तामसमुच्यते। वर्षेण तामसं प्रोक्तमालस्यास्मृतिरोधकत्। निर्गुणं तु यथेच्छं स्यात्कलौ सप्ताहकं वरम्॥ या बारह बत्तीवाला एक दीपक प्रज्वलितकर उस दीपक में सावर्णिक कृष्ण का पूजनकर उस घृतयुक्त दीपक के सामने प्रथमस्कन्ध से प्रारम्भकर द्वादशस्कन्ध पर्यन्त पाठ करने से सब गुप्त बातें सिद्ध होती हैं, या प्रत्येक अध्याय (३३५) के आदि और अन्त में (ॐ दुर्गा देवि शरणमहं प्रपद्ये प्रतिकूलं मे नश्यतु अनुकूलं मे प्रयच्छतु स्वाहा) इस मन्त्र का सम्पुट करने से सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं। या वनदुर्गा के मन्त्र से सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं। या प्रथमस्कन्ध के ही पाठ से सब पाप दूर हो जाते हैं। मातृगमन या तत्सदृश पापों से भी मुक्त हो जाता है और इसके पाठ से गर्भस्तम्भन होता है। उसका क्रम यह है कि कुमारी कन्या से कते सूत को लेकर (ॐ पाहि पाहि मायायोगिन् देव देव जगत्पते। नान्य त्वदभयं पश्ये यत्र मृत्युः परस्परम्॥ अभिद्रवति मामीश शरस्तप्तायसो विभो॥ कामं दहतु मां नाथ मा मे गर्भो निपात्यताम्॥ (प्रथम स्कन्ध अ० ८ श्लोक ९, १०) इन दो मन्त्रों से पादाङ्गुष्ठ से प्रारम्भकर केशपर्यन्त पाँचबार सूत्र को लेकर 'ॐ पाहि पाहि' इस मन्त्र से नौ गाँठ देते समय 'अमुक का गर्भ स्तम्भन करो'—यह कह उसको कटि देश में धारण करा दे। इससे गर्भस्तम्भन होता है—यह अनुभव सिद्ध है। गर्भवती स्त्री और उसका पति श्रद्धा से सनियमवान् होकर भागवत प्रथमस्कन्ध का पाठ-श्रवण करे। (८) द्वितीयस्कन्ध के श्रवण में दीपक की साक्षी देकर उसका पाठ करने से विराट् का दर्शन हो जाता है और हृदय में उसके स्वरूप का ज्ञान ही रह जाता है (९) तृतीयस्कन्ध के पाठ से शत्रुओं को जीत लेता है और संग्राम में उसकी विजय होती है। (१०) चतुर्थस्कन्ध के श्रवण से धनी होता है और वंश की परम्परा बनी रहती है, और विवाह भी (विवाहार्थी प्राप्नुयात्कन्यां सत्यं सत्यं वरानने) हो जाता है। (११) पञ्चमस्कन्ध के श्रवण से चौदह लोकों का ज्ञान हो जा सकता है और पञ्चमस्कन्ध के पाठ से द्वीपों का अधिपति हो जाता है तथा शिशुमारचक्र का दर्शन भी हो जाता है! (१२) षष्ठ और सप्तम स्कन्ध के अनुष्ठान से भगवान् में स्थिर भक्ति (दृढा भक्तिर्भगवति रसस्कन्धस्य पाठतः। स्वर्ग्यं यशस्यमायुष्यं धर्मार्थपरिकीर्तयेत्॥) बनी रहती है। (१३)

* स्थितिक्रमो भुक्तिकामे मुक्तिकामे च संहतिः। श्रीकामे पुष्टिकामे च सृष्टिक्रम उदाहृतः॥

अष्टमस्कन्ध के-असदविषयमङ्घ्रिं भावगम्यं प्रपन्नानमृतममरवर्यानाशयत् सिन्धुमथ्यम्। कपटयुवतिवेषो मोहयन् यः सुरारीस्तमहमुपसृतानां कामपूरं नतोऽस्मि॥ (भागवत स्कन्ध ८ अ० १२ श्लोक ४७) मन्त्र से संपुट करनेपर सब मनोरथ सिद्ध होते हैं। या गजेन्द्रमोक्षस्तोत्र के पाठ से सब आपत्तियाँ हट जाती हैं यह अनुभव सिद्ध है। (१४) नवमस्कन्ध के पाठ से वंश की (नवमस्कन्धपाठेन वंशवृद्धिर्हि जायते। बन्ध्या वा काकबन्ध्या वा मृतापत्या च याङ्गना। श्रुत्वा स्कन्धमिमं सर्वं लभते चिरजीविनम्॥) वृद्धि होती है। और आदि-अन्त में 'ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥' इसका जप १०००१, १००१, १०८, १० या यथासंख्या करे। दशमस्कन्ध-दशमस्य विशुद्ध्यर्थं नवानामिह लक्षणम्। वर्णयन्ति महात्मान इति दशमो हरिः॥ वृद्धैकोत्तरजाप्यमष्टादशदिनावधि। सिध्यन्ति सर्वकार्याणि नात्र कार्या विचारणा॥ कृष्णयन्त्रं विधाय शालिग्रामादिसमीपे दशमस्कन्धस्य वृद्धिपाठः कर्तव्यः। अन्ते द्वादशाक्षर (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) मन्त्रेण हवनं तर्पणं मार्जनं ब्राह्मणभोजनं च कार्यम्। ततः युगलगीतम्, गोपिकागीतम्, भ्रमरादिगीतं च पृथक्-पृथक् कार्यम्। एतेन गायनविद्यादिकादीनि भवन्तीत्यनुभूतमिति ज्ञेयम्। यस्याघ्रिपङ्कजःस्नपनं महानतो वाञ्छन्त्युमापतिरिवात्मतमोऽपहत्यै। यर्हम्बुजाक्ष न लमेय भवत्प्रसादं जह्यामसून व्रतकृशाञ्छतजन्मभिः स्यात्॥ (स्कन्ध १० उक्त० अ० ५२ श्लोक ४३) इति मन्त्रेण सम्पुटितेन कन्याप्राप्तिः। दीपाग्रे केवलनमस्कारेणापि पूर्वमेव फलं भवति। तमेव परमात्मानं जारबुद्ध्यापि सङ्गताः। जहर्गुणमयं देहं सद्यः प्रक्षीणबन्धनाः॥ (भा० स्क० पू० अ० २९ श्लोक ११) इतिमन्त्रसम्पुटितेन निकृष्टप्रारब्धकर्मनाशो भवति। भगवानपि ता रात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः। वीक्ष्य रन्तुं मनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः॥ (भागवत स्क० पू० अ० २९ श्लोक १९) इतिमन्त्रसम्पुटितेन कन्दर्पदर्पविजयोभवेत्। रजन्येषा घोररूपा घोरसत्त्विनिषेविता। प्रतियात व्रजं नेह स्थेयं स्त्रीभिः सुमध्यमाः॥ (भा० स्क० १० पू० अ० २९ श्लोक १९) इति मन्त्रेण सम्पुटितेन बन्धनान्मुक्तो भवति। नेहस्थेयमित्यत्र कार्य योजना। निशम्य गीतं तदनङ्गवर्धनं वज्रस्त्रियः कृष्णगृहीतमानसाः। आजगमुरन्योन्यमलक्षितोद्यमाः स यत्र कान्तो जवलोलकुण्डलाः॥ (भा० स्क० २९ श्लोक ४) इतिसम्पुटेनाकर्षणो भवति। तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः। पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः॥ (भा० द० पू० अ० ३२ श्लोक २, १९) इस मन्त्र के सम्पुट से कृष्ण का दर्शन हो सकता है। भजन्तोऽनुभजन्येक एक एतद्विपर्ययम्। नोभयाञ्च भजयाञ्च भजन्येक एतन्नो ब्रूहि साधु भोः॥ इस मन्त्र के सम्पुट से भविष्य का ज्ञान होता है। वाणलिङ्गे इदं यन्त्रं अष्टगन्धेन कुंकुमेन भोजपत्रादिपत्रे विलिख्य षोडशाद्युपचारैः सम्पूज्य तदग्रे पूर्वोक्तमन्त्रस्यायु त संख्याकं जपं कुर्यात्। अनेन स्वप्ने शुभाशुभस्य समाचारं कथयति।

२७	२०	२५
२२	२४	२६
२३	२८	२१

एकादशस्कन्धपाठारम्भे यन्त्रं विधाय एकादशवर्तिसंयुक्तं दीपं प्रज्वाल्य द्वादशाक्षरमन्त्रस्य (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) आदौ अष्टोत्तरशतजपं विधाय एकादशस्कन्धस्य पाठः कर्तव्यः। पाठान्ते पुनरष्टोत्तरशतं जपं कुर्यात्। एवमवशिष्ट दशदिनपर्यन्तं कृत्वा अन्तिमदिने उत्तरपूजनादिकं कृत्वा 'ध्येयं सदा परिभवध्नमभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिवविरिञ्चिनुतं शरण्यम्। भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥' (भाग० स्क० ११, अ० ५ श्लोक ३३,) इत्यादि मन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं विधाय ब्राह्मणं दक्षिणादिना सन्तोष्य यथा परिमितान् ब्राह्मणान् भोजयेत्। तेन ज्ञानवान् भवति, यदि एकादशस्कन्धस्य 'ओं यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव। पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदुस्तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि॥' इति मन्त्रेण सम्पुटितेन शुक्रस्य साक्षात्कारो भवति। दर्शनमात्रं वा भवति। 'मा निषाद प्रतिष्ठा त्वंअगमः शाश्वती समाः। यत्क्रौञ्चमिथुनादेकं अवधीः काममोहितम्॥' (रामायण बालकाण्ड सर्ग २ श्लो० १५) इस मन्त्र से सम्पुट करने पर महापण्डित होता है। उसकी संसार में कीर्ति फैलती है। द्वादशस्कन्धस्य पाठारम्भे द्वादशारं षोडशारं यन्त्रं वा विधाय द्वादशवर्तिकादीपं प्रज्वाल्य पूर्वोक्तयन्त्रस्यावरणादिकस्य पूजां विधाय अष्टोत्तरशतसंख्याकं द्वादशाक्षरस्यादावन्ते च जपं विधाय द्वादशपाठं द्वादश दिनपर्यन्तं कुर्यात्। पुनरन्ते उत्तरपूजनं विधाय पञ्चदश ब्राह्मणान् भोजयेत् अशक्तौ द्वादश वा। तेन मानसिककार्यसिद्धिर्भवति। अथवा द्वादशस्कन्धस्थित (अ० ८ श्लोक ४०-४९) मार्कण्डेयस्तुतिमारभ्य स्तुत्यन्तं पाठकरणेन कलौ

सुद्धर्मत्वात् चिरजीवी भवति। अन्ते विष्णुलोकं गच्छति। (क) प्रत्येक स्कन्ध के आरम्भ और समाप्ति पर गन्ध, पुष्प, नैवेद्य आदि पञ्चोपचार या सति सामर्थ्य में अन्य उपचारों द्वारा भागवत का पूजन आदि (कथारभे कथोत्थामे नित्यं नीराजनं चरेत्) करे (ख) (शुक उवाच। नन्दस्त्वा०-रमाक्रीडमभूत्पु) स्कन्ध १० पूर्वार्ध अ० ५० श्लोक १-१८) तक सोलह सौ बार तुलसीवृक्ष और शालिग्राम की मूर्ति के सान्निध्य में पाठ करने से धन, सन्तान आदि में विशेष परिवर्तन हो जाता है और 'का त्वा मुकुन्द महती कुल (श्लोक-३८ से ४४ दशमस्कन्ध उत्तरार्ध अध्याय २५) १० आवृत्ति रोज बारह, चौबिस या अड़तालिस दिन हर एक कामना के लिये करे। अन्त में यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन कराये। (ग) नारायणकवच तथा रुद्रगीत-शत्रुशमनार्थ, पयोव्रत-सन्तान चाहनेवाले, (इसमें मिट्टी जंगली सूअर के जगह की ले) गजेन्द्रमोक्ष पति आदि को संकट से बचने-बचाने तथा ऋण को दूर करने के लिये पृथुचरित्र-मोक्षकामना के लिये, ब्रह्मस्तुति-आकर्षण के लिये पाठ करे। इस प्रकार भागवतस्थित स्तुति आदि का पाठ कामनापरक करे। जो विशेष दरिद्र या अन्यकामनाओं को हृदय से चाहते हैं वे लोग शालिग्राम तथा तुलसी के सान्निध्य में भागवत के प्रत्येक श्लोक का पाठ, नमस्कार और प्रदक्षिणा करें। इससे उसकी कीर्ति देश-देशान्तर में फैलती है एवं वह संसार का सम्राट् वंश परंपरागत कहा जाता है। यहाँ काशी की प्रसिद्ध कथा है।

(घ) ओं कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने। प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः॥ (भागवत दश. अ० ७३ श्लोक १६) अस्य श्रीकृष्णायेत्यादि मन्त्रस्य श्रीकृष्णो देवता व्यास ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः, कामो बीजम्, सर्वाभिलषित फलावाप्तये जपे विनियोगः। ओं कृष्णाय-अंगुष्ठाभ्यां नमः। ओं वासुदेवाय तर्जनीभ्यां नमः। ओं हरये-मध्यमाभ्यां नमः। ओं परमात्मने-अनामिकाभ्यां नमः। ओं प्रणतक्लेशनाशाय-कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ओं गोविन्दाय नमो नमः इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यासः। (यद्वा-ददृशुस्ते घनश्यामं पीतकौशेयवाससम्। श्रीवत्साङ्गं चतुर्बाहुं पद्मगर्भारुणेक्षणम्॥ चारुप्रसन्नवदनं स्मरन्मकरकुण्डलम्। पद्महस्तं गदाशंखरथांगैरुपलक्षितम्॥ किरीटहारकटककटिसूत्राङ्गदाचितम्। भ्राजद्वरमणिग्रीवं निवीतं वनमालया)। (च) बालग्रह (पूतना आक्रमण) दूर करने में अव्यादजोऽङ्घ्रि मणिमांस्तव जान्वथोरू यज्ञोऽच्युतः कटितटं जठरं हस्यास्यः। हृत्केशवस्त्वदुर ईश इनस्तु कण्ठं विष्णुर्भुजं मुखमुरुक्रम ईश्वरः कम्॥ चक्रयग्रतः सहगदो हरिरस्तु पश्चात्त्वत्पार्श्वयोर्धनुरसी मधुहाजनश्च। कोणेषु शङ्ख उरुपाय उपर्युपेन्द्रस्ताक्षर्यः क्षितौ हलधरः पुरुषः समन्तात्॥ इन्द्रियाणि हृषीकेशः प्राणान् नारायणोऽवतु। श्वेतदीपपतिश्चित्तं मनो योगेश्वरोऽवतु॥ पृश्निगर्भस्तु ते बुद्धिमात्मानं भगवान् परः। क्रीडन्तं पातु गोविन्दः श्यामं पातु माधवः॥ व्रजन्तमव्याद् वैकुण्ठ आसीनं त्वां श्रियः पतिः। भुञ्जानं यज्ञभुक् पातु सर्वग्रहभवृङ्करः॥ डाकिन्यो यातुधान्यश्च कूष्माण्डा येऽर्भकग्रहाः। भूतप्रेतपिशाचाश्च यक्षरक्षोविनायकाः॥ कोटरा रेवती ज्येष्ठा पूतना मातृकादयः। उन्मादा ये ह्यपस्मारा देहप्राणोन्द्रियद्रुहः॥ स्वप्नदृष्टा महोत्पाता वृद्धबालग्रहाश्च ये। सर्वे नश्यन्तु ते विष्णोर्नामग्रहणभीरवः॥ (भागवत दशमस्कन्ध पू० अ० ६ श्लोक० २२-२९) और कामनापरक दुर्गा सप्तशती के* प्रचलित मन्त्रों से सम्पुट करने से सद्यः फल मिलता है।

श्रीमद्भागवतं पुराणममलं यत् वैष्णवानां धनम्, श्रीरूपेशप्रकाशितं सुललितं यस्मिन् हरिः गीयते।
श्रीमद्विद्याधरात्मजः श्रुतिधरः यो विदुषां चूडामणिः, श्रीविश्वेशप्रसादनाथ रचिता टीका सरस्वती शुभा॥

* पुरश्चर्यार्णवे-पञ्चमिः सप्तमिर्वाऽपि नवैकादशभिस्तथा। अदीर्घदिवसे क्षिप्तं विदध्याच्चण्डिकामखम्॥ अयुग्मब्राह्मणैः कार्यं शतावृत्तं प्रसिद्धये। त्रिपञ्चसप्तनवभिर्दिनैः पक्षेण वा पुनः॥ देवीमाहात्म्यपाठं तु यागैर्विप्रैः कृतं च यत्। निष्फलं च भवेत् सर्वं भूतिनाशं च प्राप्नुयात्॥ इति यद्वचनत्रयं क्रोडतन्त्रनाम्ना पठ्यते तत् तु निर्मूलम् तन्त्रानुपलम्भादनेकतन्त्रविरोधाच्च।

* श्रीमद्भागवत-श्रवण का माहात्म्य *

हरिरुवाच— ब्राह्मणीगमने पापं षष्ठस्य श्रवणे न हि। द्विबाहुकण्ठरूपस्य मम नश्यति यद् भवेत्॥ १ ॥ शृणु ब्रह्मत्रितिहासं कल्याणस्य प्रदायकम्। कदाचिदेवराजो हि धृत्वा रूपमथौतुकम्॥ २ ॥ अहल्यां गौतममुनेर्भार्या प्राप विमोहितः। विलोक्य तं मुनिवरो महेन्द्रं शप्तवांस्तदा॥ ३ ॥ येन त्वं जाररूपेण ह्यागतो मम मन्दिरम्। अतः शक्रशरीरे ते भगानां च सहस्रकम्॥ ४ ॥ सदनं प्राप्य शक्रः स्वं मुमोह च रुरोद च। ततो जगाम तपसे वनं वर्षसहस्रकम्॥ ५ ॥ ततो वृत्रसमाक्रान्ता देवा मां शरणं ययुः। मया प्रोक्ता हि देवा यत्रेन्द्रस्तत्र गच्छत॥ ६ ॥ मया सह महाभागाः स च वृत्रं वधिष्यत। तत्र गत्वाहमवचं वरं ब्रूहि पुरन्दर॥ ७ ॥ पुरन्दर उवाच— ब्राह्मणीकृतसङ्गाच्च प्रपन्नोऽहं जनार्दन। तत्पापं मे यथा यातु तथा त्वं वद माधव। तथा भगसहस्रं मे शरीरस्थं विनाशय॥ ८ ॥ विष्णुरुवाच— नेत्रतां भगसाहस्रं यातु मत्कृपया हरे। यदा त्वं विश्वरूपाद्वै कवचं षष्ठसम्भवम्॥ ९ ॥ पठिष्यसि तदा पापं सर्वं ब्राह्मणि सङ्गजम्। विनश्यति न सन्देह इतिहासमतः शृणु॥ १० ॥ सिन्धुदेशेऽभवद्विप्रोऽध्येतुं स गुरुमन्दिरम्। जगाम तत्र विद्यायामभ्यासं प्रचकार सः॥ ११ ॥ ब्राह्मण्या गमनं तत्र स चकार धृतव्रतः। निःसारितः स गुरुणा कुष्ठक्रान्तस्तदा भवत्॥ १२ ॥ गर्हयन्नात्मनः कर्म मुमोहाथ धृतव्रतः। देशे देशे भ्रमन् विप्रो वनमध्ये सरोवरम्॥ १३ ॥ ददर्श तत्तटे तस्थो जलपानार्थमुद्यतः। तत्र भागवतीयं हि पुस्तकं षष्ठसंभवम्॥ १४ ॥ दृष्ट्वा तद्वाचयामास स विप्रो दूरसंस्थितः। अर्द्धश्लोकोच्चारणाच्च कीटास्ते देहतो गताः। दिव्यदेहमनुप्राप्य ययौ वैकुण्ठमन्दिरम्॥ १५ ॥

* अष्टादशपुराणपारायण-विधान *

शुक्लपक्षे दिने शुद्धे वारनक्षत्रयोगतः। करणे चापि लग्ने च ग्रहताराबलान्विते॥ अमूढे न ग्रहे बाले न च वृद्धौ गुरौ स्थिते। न कृष्णपक्षे ग्रहणे न च नास्तिकसन्निधौ॥ शुद्धगेहेऽथवा शुद्धवेदिकायां मठेऽथवा। नदीतीरे देवगेहे सभामण्डप एव च॥ रथ्यामठेऽथवा रम्ये पुण्यशालासुराधव। पूर्वोक्तलक्षणोपेतं पुराणं शृणुयादिति॥ स्वयं नमस्य विप्रेन्द्रान् पुराणज्ञं विशेषतः। आसनं कल्पितं कुर्यादूर्ध्वं सर्वविशेषितम्॥ एहि धर्मासनमिति वक्तव्यं स्यादनिष्ठुरम्। पुराणप्रक्रमदिने यत्कार्यं तदुदीरयेत्॥ व्याख्यातारं पुराणस्य वस्त्राद्यैः परिपूजयेत्। शुभानि दत्त्वा वस्त्राणि सूक्ष्माणि च नवानि च॥ करकण्ठविभूषादि पात्रमासनमेव च। गन्धपुष्पाक्षतैः पूज्य ताम्बूलं विनिवेद्य च॥ शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥ सभासदश्च संपूज्य गणेशं पूजयेत्ततः। ॐ नमेत्यादि मन्त्रेण पूजनं भारती नुतिः॥ प्रातःकाले पुराणस्य प्रक्रमं प्रारभेदिति। उपक्रमदिने त्वेकं त्रयं च दश वा पुनः॥ श्लोको द्वितीये दिवसे ततो द्विगुणिताः शुभाः। तृतीये दिवसे राम ततश्चाधिकमिष्यते॥ सुदिनानामव्यच्छेदाद् पुराणं श्रवणं तथा। व्यवस्थितिर्यदा जाता तदा पौराणिकं गुरुम्॥ ताम्बूलानि प्रदायाथ परद्युः शृणुयादिति। पुराणमेव श्रोतव्यं दैनन्दिनमिति श्रुतिः॥ व्रतरूपेण यः कश्चित्पुराणं शृणुयान्नरः। यदैवं तु भवेदेवं तत्र याति न संशयः॥ पुराणं श्रोतुकामेन श्लोकश्चैकोऽपि चेच्छ्रुतः। तद्दिने तु कृतं पापं नाशयेत्तु न संशयः॥ एवं पुराणं शृणुयाच्च यस्तु स ब्रह्महत्याकृतपापबन्धनात्। सुरापीतिः स्वर्णहरश्च रामगुर्वङ्गनागश्च विमुक्तिमेति॥ भारतश्रवणे चापि नियमा ये मयेरिताः। आदिपर्वसमाप्तौ च सूक्ष्मवस्त्रत्रयं ददेत्॥ सुवर्णं च यथाशक्ति सभापर्वणि वाससी। अनुशासनिकारण्यस्वर्गारोहेषु पर्वसु॥ आदिपर्वणि पूजा या सा पूजा नृपपुङ्गव। कर्णाश्वमेधवैराटशल्यद्रोणेषु पर्वसु॥ सूक्ष्मवस्त्रत्रयं शुद्धं निष्कद्वयमथापि वा। क्षुद्रपर्वस्वथान्येषु निष्कावथ समानयेत्॥ हरिवंशे सनिष्कं तु वस्त्रत्रितयमेव च। भारतस्याखिलस्यैव समाप्तौ क्षेत्रदा भवेत्॥ रामायणस्य श्रवणे काण्डे काण्ड प्रपूजयेत्। क्षेत्रं पर्याप्तमथवा सुवर्णमपि दापयेत्॥ अन्यान्यपि पुराणानि मुनिप्रोक्तानि तान्यपि। श्रोतृणां पापनाशाय वक्तुश्चापि विशेषतः॥ यश्च सर्वं पुराणानि षट्त्रिंशत्तु प्रकीर्तयेत्। शृणोति वा न तस्यास्ति चित्तच्छेदः कदाचन॥ (अनुष्ठानप्रकाश पृ० २८९-२९० से उद्धृत)।

* अथ गङ्गापूजनम् *

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥ प्राणायामः। देशकालौ संकीर्त्य-मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सर्वपापक्षयपूर्वक-सर्वक्लेशनिवारणवाञ्छितमनोरथसिद्ध्यर्थं मया सह दशपूर्वान् दशापरान् वंशान्नरकोद्धारणार्थं यथोपचारैः गङ्गापूजनं करिष्ये- इति सङ्कल्प्य ध्यानं कुर्यात्। चतुर्भुजां त्रिनयनां शुद्धस्फटिकसन्निभाम्। ध्यायेऽहं मकरारूढां शुद्धवस्त्रां शुचिस्मिताम्॥ ध्यायामि। विष्णुपादाब्जसम्भूते विश्वनाथशिरस्थिते। आवाहयामि गङ्गे! त्वां भक्ताऽभीष्टफलप्रदे॥ आवाहयामि। मुक्तारत्नसुवर्णादिखचितं सुन्दरं शुभम्। सिंहासनं प्रदास्यामि गृहाण मकरासने। आसनं समर्पयामि। सिन्धवादिसरिदुद्भूत गन्धपुष्पसमन्वितम्। पाद्यं ददाम्यहं देवि! प्रसीद परमेश्वरि!॥ पाद्यं स०। ब्रह्मकमण्डलुसम्भूते! गङ्गे! त्रिपथगामिनि! गृहाणाऽर्घ्यं प्रदास्यामि जह्नुकन्ये नमोऽस्तु ते॥ अर्घ्यं स०। सुवर्णकलशाऽऽनीतं नानागन्धसुवासितम्। आचम्यतां मया दत्तं गृहाणाऽमृतवर्षिणि!॥ आचमनीयं स०। पयो दधि घृतं क्षौद्रं रम्भाफलसमन्वितम्। पञ्चामृतमिदं देवि! स्वीकुरुष्व महेश्वरि॥ पञ्चामृतं स०। नर्मदायमुनासिन्धुगोदावर्याऽऽहृतैर्जलैः। स्नापयामि शिवे! भक्त्या भागीरथि नमोऽस्तु ते॥ स्नानं स०। वैदूर्यपद्मरागादिखचितं मेखलान्वितम्। सुवर्णसूत्रसंयुक्तं क्षौमं दास्यामि गृह्यताम्। वस्त्रं समर्पयामि। मलयाचलसम्भूतं कस्तूरी-कुङ्कुमान्वितम्। कर्पूरमिश्रितं गन्धं गृहाण परमेश्वरि॥ गन्धं स०। अक्षतान् शालिसम्भूतान् हरिद्राकुङ्कुमान्वितान्। पूजार्थं सङ्गृहाणेमममक्षय्यफलदायिनि!॥ अक्षतान् स०। वज्रवैदूर्यमाणिक्यपद्मरागादिनिर्मितम्। कङ्कणं करशोभार्थं कामितार्थफलप्रदे॥ आभरणं स०। केतकीतुलसीविल्व-मल्लिकाकमलादिभिः। पुत्रागैरर्चयामि त्वां गृहाणाऽमरवन्दिते॥ पुष्पं स०।

* अथाङ्गपूजा *

ॐ पर्वतवासिन्यै नमः-पादौ पूजयामि। भक्तवत्सलायै नमः-गुल्फौ पूज०। जगद्धात्र्यै न०-जङ्घे पू०। जाह्नव्यै न०-जानुनी पू०। शैलसुतायै न०-ऊरू पू०। समुद्रगामिन्यै न०-कटिं पू०। मकरारूढायै न०-गुह्यं पूज०। आनन्दवर्धिन्यै न०-जघनं पू०। गङ्गायै न०-नाभिं पू०। जगत्कुक्ष्यै न०-उदरं पू०। विशालवक्षायै न०-वक्षःस्थलं पू०। हादिन्यै न०-हृदयं पू०। सुस्तन्यै न०-स्तनौ पूज०। तरङ्गिण्यै न०-पार्श्वौ पूज०। उन्नतकण्ठ्यै न०-कण्ठं पू०। त्रैलोक्यसुन्दर्यै न०-स्कन्धौ पूज०। अमृतकलशहस्तायै न०-हस्तान् पूज०। लीलाशुकधारिण्यै न०-बाहौ पूज०। विद्याप्रकाशिन्यै न०-मुखं पू०। त्रैलोक्यवासिन्यै न०-ललाटं पू०। सुनासिकायै न०-नासिकां पू०। मकरकुण्डलधारिण्यै न०-श्रोत्रे पू०। विम्बोष्ठ्यै न०-ओष्ठौ पू०। अनाथरक्षिण्यै न०-अधरं पू०। चञ्चलगत्यै न०-जिह्वां पूज०। अलकनन्दायै न०-गण्डस्थलं पू०। तिलकधारिण्यै न०-भालं पू०। ज्ञानरूपिण्यै न०-चिबुकं पू०। अमृतविम्बायै न०-अलकां पू०। भीमरथ्यै न०-शिरः पू०। भागीरथ्यै न०-सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि।

* अथ धूपादिपूजा *

चन्दनाऽगरुमुस्तादिघृतगुग्गुलसंयुतम्। दशाङ्गद्रव्यसंयुक्तं धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्। धूपं स०। साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥ दीपं स०। शाल्यन्नं व्यञ्जनैर्युक्तं सूपाऽपूपघृतान्वितम्। क्षीराऽन्नं लड्डुकोपेतं भुज्यताममृताशिनी॥ नैवेद्यं स०। पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्। कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ ताम्बूलं स०। तेजःपुञ्जस्वरूपे ते तेजसा भासितं जगत्। नीराजयामि गङ्गे त्वां भक्त्याऽभीष्टफलप्रदे। नीराजनं स०। गङ्गे! त्रिपथगे! दिव्ये! जाह्नवि! त्रिदिवस्थिते!। प्रदक्षिणां करोमि त्वां प्रणताघौघनाशिनी॥ प्रदक्षिणां स०। अद्य पूर्वोक्तं० प्रीत्यर्थं गङ्गाभागीरथौपूजान्ते क्षीराऽर्घ्यप्रदानं करिष्ये। ब्रह्मकमण्डलुसम्भूते गङ्गे त्रिपथगामिनि! देवि गृहाणाऽर्घ्यं नमोऽस्तु ते। गङ्गायै नमः-इदमर्घ्यम्। प्रालेयाचलसम्भूते प्राचीनाब्धिसमागमे। प्राणिनां भवरोगघ्नी पूजां सम्पूर्णतां कुरु॥ पुत्रपौत्रधराधान्यपशुपुण्यफलोदयम्। देहि मे देवि! भक्तिं ते त्वत्पादकमले सदा॥ प्रार्थना॥

* अथ सप्ताहादिपूजनक्रमः *

नारद उवाच— श्रीमद्भागवतं चैतत्पुराणं ब्रह्मसम्मितम्। सप्ताहश्रवणं तस्य त्वतिपुण्यप्रदं भवेत्॥ सङ्क्षेपेण विधिं वक्ष्ये तत्प्रदानसमन्वितम्। गणेशपूजनं कुर्यात्पूर्वं वै स्वस्तिवाचनम्॥ कलशस्थापनं तत्र वरुणावाहनं तथा। मण्डले सर्वतोभद्रे श्रीकृष्णस्य च पूजनम्॥ रुक्मिणीसहितस्यैव गोपालसहितस्य च॥ अङ्गोपाङ्गायुधानान्तु पूजनं परितस्तथा॥ उपचारैः षोडशभिर्भक्तिभावेन संयुतः। व्यासस्य वरणं कुर्यात्सुवर्णैर्भूषणैस्ततः॥ द्विजहस्ताक्षरेणैव लिखितं शोधितं शुभम्। पट्टिकावेष्टनयुतं पुस्तकं पूजयेत्ततः॥ व्यासमुच्चासनं कृत्वा तदग्रे पुस्तकं न्यसेत्। मित्रादिगणसहितः सकुटुम्बः समाहितः॥ शृणुयात्तं द्विजं चित्ते शुक रूपं विचारयन्। मण्डपं कदलीस्तभं वितानैस्तोरणैर्युतम्॥ कुर्यादास्तरणे भूरि श्रोतृणां सुखहेतवे। उदङ्मुखो भवेद्वक्ता श्रोता वै प्राङ्मुखस्तथा॥ प्राङ्मुखश्चेद्वेद्वक्ता श्रोता चोदङ्मुखस्तथा। आसूर्योदयमारभ्य सार्धं त्रिप्रहरान्तिकम्। वाचनीया कथा सम्यक् सावधानतयाऽनिशम्। मध्यमं सुखकरं कृत्वा स्पष्टार्थं विरलाक्षरम्। कथाविरामः कर्तव्यो मध्याह्ने घटिकाद्वयम्। तत्कथामनुकार्यं वै कीर्तनं वैष्णवैः सह॥ हविष्यान्नं तु कर्तव्यो लघ्वाहारः सुखावहः। फलाहारेण वा स्थेयमेकभक्तेन वा पुनः॥ एवं पारायणं श्रुत्वा शुभं सप्तदिनावधि। श्रीकृष्णपूजनं कृत्वा समाप्तौ हवनं चरेत्। गायत्र्या दशमं स्कन्धश्लोकैर्वा वेदरीतितः। हेमसिंहासनस्थं सत्पुस्तकं शुक रूपिणे॥ दद्यात् व्यासाय विधिवदलङ्कृत्य विधानतः। साङ्गतासिद्धये दद्यात्सौवर्णीं दक्षिणां ततः॥ करौ द्वौ सम्पुटीकृत्य विष्णोश्च विनयं वदेत्। माहात्म्यं पुस्तकस्य व्यासस्य स्तुतिरेव च। एवं कृते मनुष्याणां भवेत्रपापप्रणाशनम्। इहलोके सुखावाप्तिः परलोकेऽक्षयं सुखम्॥

* अथ श्रीकृष्णपूजनम् *

शुभे दिने सपत्नको यजमानः कृतनित्यकृत्यः शान्तिपाठादिकं पठित्वा सङ्कल्पं कुर्यात्— देशकालौ सङ्कीर्त्य—सर्वकिल्बिषोपशमनार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तसमस्तशुभफलप्राप्तिकामः श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये अष्टादशपुराणान्तर्गतस्याष्टादशसहस्रपरिमितश्लोकात्मकस्य श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य सप्ताहपुराणविधिना कथाश्रवणमहं करिष्ये। तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं, मातृकापूजनम्, वसोर्धारापूजनम्, आयुष्यमन्त्रजपं, नान्दीश्राद्धं वरणं च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये— इति सङ्कल्प्य पूजनं ग्रहशान्त्यनुसारेण कुर्यात्। ततः व्यासस्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य पञ्चोपचारैः पूजनं कृत्वा वरणसामग्रीं गृहीत्वा देशकालौ सङ्कीर्त्य—अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य सप्ताहपारायणकर्तृत्वेन एभिर्वरणद्रव्यैरहं वृणे। अथ न्यासः— ॐ केशवाय नमः वामकरे १ ॐ नारायणाय नमः दक्षिणकरे २ ॐ माधवाय नमः वामपदे ३ ॐ गोविन्दाय नमः दक्षिणपदे ४ ॐ विष्णवे नमः वामजानौ ५ ॐ मधुसूदनाय नमः दक्षिणजानौ ६ ॐ त्रिविक्रमाय नमः वामकट्याम् ७ ॐ वामनाय नमः दक्षिणकट्याम् ८ ॐ श्रीधराय नमः नाभौ ९ ॐ हृषीकेशाय नमः हृदये १० ॐ पद्मनाभाय नमः कण्ठे ११ ॐ अनिरुद्धाय नमः मूर्ध्नि १२ अथ पञ्चाङ्गन्यासः— ॐ पुरुषोत्तमाय नमः हृदयाय नमः १ ॐ अघोक्षजाय नमः शिरसे स्वाहा २ ॐ नृसिंहाय नमः शिखायै वषट् ३ ॐ अच्युताय नमः कवचाय हुम् ४ ॐ जनार्दनाय नमः अस्त्राय फट् ५ अथ ध्यानम्— शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्। लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥ आवाहनम्— (१) आगच्छ कृष्ण देवेश तेजोराशिः जगत्पते। रुक्मिण्या सह लोकेश त्राहि मां भवसागरात्॥ १॥ पाद्यम्— नन्दनन्दन गोपेश गोपीमण्डलमण्डित। त्वया चैतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्घ्यं

(१) चिच्छक्तिजुष्टं प्रभुं त्वामावाहये पूजनमन्दिरेऽस्मिन्। विलोक्य भक्तिं मम किङ्करस्य श्रीकृष्णसान्निध्यमिहाद्य तेऽस्तु॥ आसनम्— स्फुरत्प्रभं काञ्चनरत्ननिर्मितं यदर्धचन्द्रेण च विन्दुना युतम्। हृत्पद्ममालम्बितं विधिवन्मयाऽर्पितं राधापते तुभ्यमिदं शुभासनम्॥ औदुम्बरे सुन्दरभाजनेऽमले रेखाङ्किते पद्मदलानुकारिणि। प्रपूरितं पादसुखावहं तदा मयार्पितं पाद्यमिदं गृहाण॥ औदुम्बरे यत्पद्मभाजने स्थितं रेखाङ्किते पद्मदलानुकारिणि। श्रीकृष्ण तच्चन्दनपुष्पसंयुतं गृहाण हस्तार्घ्यमिदं मयार्पितम्॥ हृत्कण्ठतालवोष्ठगताभिरद्भिः पुनन्ति विप्रप्रमुखा क्रमेण। यस्मादतश्चाचमनाधर्मीश मयाऽर्पिता आप इमा गृहाण॥

प्रतिगृह्यताम्॥ २॥ अर्घ्यम्— अर्घपात्रे-गन्ध-पुष्प-तिल-श्यामाक-दूर्वा-कुश-विष्णुक्रान्त-तुलसीदलानि प्रक्षिप्य-पूतनादर्पसंहारिन् तृणावर्त निषूदन। विहारेऽनन्तरूपोऽसि गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥ ३॥ आचमनीयम्—गङ्गाजलं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम्। आचम्यतां हृषीकेश त्रैलोक्यव्याधिनाशनम्॥ ४॥ पयः स्नानम्—क्षीरशायिन् महाविष्णो लक्ष्मीहृदयभावन। दुग्धस्नानं गृहाणेदं यथाशक्त्या समर्पितम्॥ ५॥ दधिस्नानम्—दिव्यदुग्धोद्धवञ्चैतद्दधिपर्युषितं तथा। स्नानार्थं ते मयाऽऽनीतं तुलसीप्राणवल्लभ॥ ६॥ घृतस्नानम्—घृतदध्युद्धवं नित्यं सर्वेषां चैव पावनम्। घृतस्नानं गवामीश कुरुष्वैतज्जनार्दन॥ ७॥ मधुस्नानम्—क्षौद्रं सर्वरसोपेतं मधुरं सर्वरोगहृत्। इदं मधुं प्रयच्छामि तेन स्नानं समाचर॥ ८॥ शर्करास्नानम्—इक्षुरससमुद्भूता शर्करा रुक्मिणीप्रिय। घनश्याम वपुर्यते तथा संक्षालयाम्यहम्॥ ९॥ शुद्धोदकस्नानम्—शुद्धोदकं मयानीतं तुलसीचन्दानान्वितम्। गृहाण देवदेवेश वृषभानुसुतापते॥ १०॥ वस्त्रम्—नारायण नमस्तेऽस्तु नरकार्णवतारक। त्रैलोक्यस्वामिने तुभ्यं ददामि वपनं शुभम्॥ ११॥ यज्ञोपवीतम्—यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं सूत्रनिर्मितम्। गृहाण गोपिकावृन्द-रासमण्डलमण्डित॥ १२॥ नानाभरणम्—अनेकरत्नखचितं तोडकं नूपरादिकम्। त्रैलोक्यालङ्कृते कृष्ण गृहाणाभरणानि च॥ रत्नकं मणिवैदूर्यमुक्ताहारादिकं तथा। मनसा सुप्रसन्नेव सर्वं वै प्रतिगृह्यताम्॥ गन्धम्—श्रीखण्डागरुकपूरकुङ्कुमादिविलेपनम्। भक्त्या दत्तं मया देव दामोदर जगत्पते॥ १३॥ कनिष्ठामूलगदाङ्गुष्ठयोगेन गन्धमुद्रां प्रदर्श्य अनामिकया गन्धानुलेपनं समर्पयामि। पुष्पम्—माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि प्रीयतां परमेश्वर॥ सुवर्णपुष्पम्—सुवर्णस्वर्णरचितं माणिक्यखचितं शुभम्। पुष्पं गृहाण देवेश ममोपरि दयां कुरु॥ वनमाला—सत्पुण्डरीकैः करवीरमागधीकदम्बकेतक्यनुलस्यशोकजैः। नानाविधैः पल्लवपुष्पनिर्मितां मालां वनाख्यां विनिवेदयामि। पाद्यशंखजपापुष्पैः शतपत्रैर्विचित्रताम्। पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वर॥ १४॥

* अथाङ्गपूजा *

ॐ केशवाय नमः ॐ जनार्दनाय नमः पादौ पूजयामि १ ॐ नारायणाय गुल्फौ पू० २ ॐ नृसिंहाय० जानुनी पू० ३ ॐ वासुदेवाय० जङ्घौ पू० ४ ॐ उपेन्द्राय न० उरू पू० ५ ॐ गुहावासाय० गुह्यं पू० ६ ॐ गोविन्दाय० मेढ्रे पू० ७ ॐ गोवर्द्धनाय० कटिं पू० ८ ॐ पद्मनाभाय० पार्श्वे पू० ९ ॐ पुण्डरीकाक्षाय० नाभिं पू० १० ॐ अनिलाय० ॐ हृदयाय० कुक्षिं पू० ११ ॐ देवेशाय० हृदयं पू० १२ ॐ वैकुण्ठाय० उदरं पू० १३ ॐ विष्णवे० बाहौ पू० १४ ॐ वीरविक्रमाय० हस्तौ० पू० १५ ॐ विश्वंभराय० कराङ्गुलीः पू० १६ ॐ श्रीकण्ठाय० पृष्ठं पू० १७ ॐ जगदाधाराय० कण्ठं पू० १८ ॐ वेदमूर्तये० मुखं पू० १९ ॐ मुरारये० जिह्वां पू० २० ॐ दामोदराय० अधरोष्ठं पू० २१ ॐ नरहरये न० दन्तपङ्क्तिं पू० २२ ॐ सोमसूर्यनेत्राय० नासिकां पू० २३ ॐ ईश्वराय० नेत्रे पू० २४ ॐ सर्वेश्वराय० भ्रुवौ पू० २५ ॐ अच्युताय० कर्णौ पू० २६ ॐ मुकुन्दाय० ललाटं पू० २७ ॐ सहस्रशिरसे न० रोमकूपान् पू० २८ ॐ श्रीमदनन्ताय० शिरः पू० २९ ॐ श्रीकृष्णमूर्तये० सर्वाङ्गं पूजयामि। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः पादौ पूजयामि। ॐ विशालाक्षीकेशवा० गुल्फौ पू०। ॐ सुनन्दासङ्कर्षणाभ्यां नमः जङ्घे पू०। ॐ रुक्मिणीमाधवाभ्यां० जानुनी पू०। ॐ माधवी-अच्युताभ्यां ऊरू०। ॐ नारायणीगोविन्दाभ्यां कटिं पू०। ॐ मित्रविन्द-अनिरुद्धाभ्यां न० नाभिं पू०। ॐ पद्मात्रिविक्रमाभ्यां त० हृदयं पू० ॐ क्षेमकरीनृसिंहाभ्यां न० कण्ठं पू०। ॐ सत्या-वासुदेवाभ्यां न बाहूँ पू०। ॐ कालिन्दीप्रद्युम्नाभ्यां न० हस्तौ पू०। ॐ कमला-वामनाभ्यां न० मुखं पू०। ॐ विजयापुरुषोत्तमाभ्यां न० नेत्रे पू०। ॐ कान्तिश्रीधराभ्यां न० श्रोत्रे पू०। ॐ रुक्मिण्यधोक्षजाभ्यां न० ललाटं पू०। ॐ अपराजिताऋषिकेशाभ्यां न० शिरः पू०। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां न० सर्वाङ्गं पू०।

* अथ परिधिदेवपूजनम् *

पूर्वे-ॐ शङ्खाय नमः १ दक्षिणे-ॐ चक्राय नमः २ पश्चिमे-ॐ गदायै नमः ३ उत्तरे-ॐ पद्माय नमः ४ पुनः पूर्वे-ॐ वैकुण्ठाय नमः १ दक्षिणे-ॐ श्वेतद्वीपाय नमः

२ पश्चिमे-ॐ क्षीरसमुदाय नमः उत्तरे-ॐ गोलोकाय नमः ४ देवस्य वामे- ॐ यमुनायै नमः १ दक्षिणे-गङ्गायै नमः २ देवस्य पादभागे-ॐ रुक्मिण्याद्यष्टपत्नीभ्यो नमः १ तत्रैव-ॐ ललिताद्यष्टसखीभ्यो नमः १ ॐ श्रीदामाद्यष्टगोपेभ्यो नमः २ ध्रुवाद्यष्टभक्तेभ्यो नमः ३ अथ चतुर्विंशतिनामभिः कृष्णं पूजयेत्-ॐ केशवाय नमः। नारायण० माधवाय०। गोविन्दाय०। विष्णवे० मधुसूदनाय०। त्रिविक्रमाय०। वामनाय० श्रीधराय० ऋषिकेशाय० पद्मनाभाय०। दामोदराय० सङ्कर्षणाय० वासुदेवाय० प्रद्युम्नाय० अनिरुद्धाय०। पुरुषोत्तमाय०। अधोक्षजाय०। नृसिंहाय०। अच्युताय०। जनार्दनाय०। उपेन्द्राय०। हरये। श्रीकृष्णाय नमः। अथ दशावतारनाममन्त्रैः पूजयेत्-ॐ मत्स्याय०। कूर्माय० वाराहाय०। नृसिंहाय०। वामनाय०। जमदग्नये०। रघुनाथाय०। हलधराय०। बुधाय०। कल्किने०। अथान्यैर्नाममन्त्रैः पूजयेत्-ॐ सच्चिदानन्दाय०। श्रीमत्परमपुरुषाय०। परमेश्वराय०। सकलगुणनिधानाय०। अतिसुन्दराय०। अतिरमणाय०। श्रीकण्ठाय०। जगदोल्हादकारकाय०। ब्रह्माण्डाधीश्वराय०। वेदपुरुषाय०। सकलदेवकराय०। सकलदानवभयङ्कराय०। आत्मने०। अन्तरात्मने०। ज्ञानात्मने०। पर्यङ्कशायिने०। परमपुरुषाय०। अनन्तमूर्तये०। परमात्मने नमः।

* अथाष्टोत्तरशतनाममन्त्रैः पूजयेत् *

ॐ श्रीकृष्णाय० कमलनाथाय०। वासुदेवाय० सनातनाय०। वासुदेवात्मजाय०। पुण्याय०। लीलामानुषविग्रहाय०। श्रीवत्सकौस्तुभाधिपाय०। यशोदावत्सलाय०। हरये०। चतुर्भुजचक्रासिगदाशङ्खाद्यायुधाय०। देवकीनन्दनाय०। श्रीशाय०। नन्दगोपप्रियात्मजाय०। यमुनावेगसंहारिणे०। बलभद्रप्रियानुजाय०। पूतनाजीवितहराय०। शकटासुरभञ्जनाय०। नन्दव्रजजनानन्दाय०। सच्चिदानन्दविग्रहाय०। नवनीतविलिप्ताङ्गाय०। नवनीतनटाय०। अनवद्याय०। नवनीतनवहाराय०। मुकुन्दप्रसादकाय०। षोडशस्त्रीसत्त्वेशाय०। त्रिभङ्गीललिताकृतये०। शुकवागमृताब्धिबिन्दवे०। गोविन्दाय०। गोविदाम्पतये०। वस्तवाट्कुचराय०। अनन्ताय०। धेनुकासुरखण्डनाय०। तृणीकृततृणावर्ताय०। यमलार्जुनमञ्जनाय०। उत्तालतालनेत्रे०। तमालश्यामलाकृतये०। गोपगोपीश्वराय०। योगिने०। कोटिसूर्यसमप्रभाय०। इलापतये०। परञ्ज्योतिषे०। यादवेन्द्राय०। यदूद्वाहाय०। वनमालिने०। पीतवाससे०। पारिजातापहारकाय०। गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे०। गोपालाय०। सर्वपालकाय०। अजाय०। निरञ्जनाय०। कामजनकाय०। कञ्जलोचनाय०। मधुघ्ने०। मथुरानाथाय०। बलिने०। वृन्दावनान्तसञ्चारिणे०। तुलसीदासभूषणाय०। नरकान्तकाय०। नरनारायणात्मकाय०। कुब्जाकृष्णाम्बरधराय०। मारिषे०। परमपुरुषाय०। मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्धविशारदाय०। संसारवरिणे०। कंसारिणे०। मुरारये०। अनादिब्रह्मचारिणे०। कृष्णाव्यसनकर्षकाय०। शिशुपालशिरघ्ने०। दुर्योधनकुलान्तकाय०। विदुराक्रूराय०। विश्वरूपप्रदर्शकाय०। सत्यवाचे०। सत्यसङ्कल्पाय०। सत्यभामारताय०। जापिने०। सुभद्रापूर्वजाय०। विष्णवे०। भीममुक्तिप्रदर्शकाय०। जगद्गुरवे०। जगन्नाथाय०। वेणुनादविशारदाय०। वृषभासुरविध्वंसिने०। बाणासुरबलबलान्तकाय०। युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे०। बहिर्बर्हावन्तसकाय०। पार्थसारथये०। अव्यक्ताय०। गीतामृतमहोदधे०। कालीयफणिमाणिक्यरञ्जितश्रीपदाम्बुजाय०। दामोदराय०। यज्ञाय०। दानवेन्द्रविनाशनाय०। सर्वग्रहरूपिणे०। परात्पराय०। लक्ष्म्यै०। पद्मायै०। कमलायै०। इन्द्राण्यै०। हरिप्रियायै० नमः। तत्रैव-आद्यलक्ष्म्यै०। विद्यालक्ष्म्यै०। सौभाग्यलक्ष्म्यै०। अमृतलक्ष्म्यै०। कामलक्ष्म्यै०। सत्यलक्ष्म्यै०। भोगलक्ष्म्यै०। रुक्मिण्यै०। सत्यभामायै०। नाग्नित्यै०। कालिन्द्यै०। मित्रविन्दायै०। लक्ष्मणायै०। जाम्बवत्यै०। सुशीलायै०। वसुदेवाय०। देवक्यै०। नन्दाय०। यशोदायै०। बलभद्राय०। सुभद्रायै०। गोपेभ्यो०। गोपिकाभ्यो०। भीष्माय०। विदुराय०। अक्रूराय०। उद्धवाय०। गरुडाय०। सुदामाय०। पाञ्चजन्याय०। गदायै०। पद्माय०। युधिष्ठिराय०। भीमाय०। अर्जुनाय०। सहदेवाय०। नकुलाय०। कुन्त्यै०। द्रुपदायै नमः। ततः-

धूपम्— धूपं मनोहरं दिव्यं सुगन्धिघ्राणतर्पणम्। गृह्यतां रुक्मिणीनाथ राधाधव जगत्पते॥१५॥ तर्जनीमूलाङ्गुष्ठयोगेन धूपमुद्रां प्रदर्श्य धूपमाघ्रापयामि। दीपम्— लोकान्धकारदर्पणं दीपं सुघृतपूरितम्। गृहाण जगतां नाथ भक्तानां कामवाञ्छितः॥१६॥ नैवेद्यम्— अन्नं चतुर्विधं स्वादु भूतानां जीवनं परम्। नैवेद्यं ते मया दत्तं देवेश प्रतिगृह्यताम्॥१७॥ अनामिकामूलयोरङ्गुष्ठयोगेन नैवेद्यमुद्रां प्रदर्श्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत्— अङ्गुष्ठप्रदेशिनीमध्यमाभिः— ॐ प्राणाय स्वाहा १ अङ्गुष्ठमध्यमानामिकाभिः ॐ अपानाय स्वाहा २ अङ्गुष्ठानामिकाकनिष्ठाभिः ॐ व्यानाय स्वाहा ३ कनिष्ठातर्जन्यङ्गुष्ठैः— ॐ समानाय स्वाहा ४ साङ्गुष्ठाभिः— ॐ उदानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं समर्पया०। उत्तरापोशनं समर्प०। करोद्धर्तनार्थं चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। ताम्बूलम्— पूगानि नागपत्राणि कर्पूरसहितानि च। मया दत्तानि देवेश श्रीकृष्ण प्रतिगृह्यताम्॥१८॥ दक्षिणा— हृषीकेश नमस्तेऽस्तु दामोदर नमोऽस्तु ते। साधुपुण्यप्रदा चैव दक्षिणां प्रतिगृह्यताम्॥१९॥ नीराजनम्— ॐ लक्ष्मीपते परं ब्रह्म व्रतिनां पुण्यवर्धन। नीराजनं करोम्यद्य श्रीराधापरमप्रिय॥२०॥ सर्ववाद्यमयीं घण्टां देवदेवस्य वल्लभ। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन घण्टानादं तु कारयेत्॥ घण्टानादं समर्पयामि। प्रणामः— १ नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः॥१॥ नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने। नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तु ते॥२॥ प्रार्थना— संसारो दुस्सहः व्यालो लेलिहानस्य पृष्ठतः। धावन्तं पाहि मां कृष्ण कृपालुस्त्वं यतो मतः॥३॥ श्रीराम गोविन्द मुकुन्द कृष्ण श्रीनाथ विष्णो भगवन्नमस्ते। प्रौढारिषड्वर्गमहाभयेभ्यो मां त्राहि नारायण विश्वमूर्ते॥४॥ प्रसीद परमानन्द प्रसीद परमेश्वर। आधिव्याधिभुजंगेन दष्टं मामुद्धर प्रभो॥५॥ श्रीकृष्ण रुक्मिणीकान्त गोपीजनमनोहर। संसारसागरे मग्नं दीनं मां परिपालय॥६॥ तदस्तु मे नाथ सभूरिभागो भवेऽत्र वाऽन्यत्र तु वा तिरश्चाम्। येनाहमेको भगवज्जनानामभुक्त्वा निषेवे तवपादपल्लवम्॥७॥

* अथ पुस्तकपूजनम् * (पञ्चोपचारेण)

गन्धम्— श्रीमद्हरिकथासारश्रुतपुण्यप्रवर्द्धन। पुराणप्रवरं कृष्णं वै गन्धेनार्चयाम्यहम्॥ पुष्पम्— द्वादशस्कन्धविश्रामरूप प्रेमविवर्द्धनम्। नानाख्यानसमायुक्तं पुष्पाणि प्रददाम्यहम्॥ धूपम्— वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आग्नेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ दीपम्— अज्ञानां तिमिरान्धानां दिवाकरसमप्रभ। नानाध्यायाकुलतनो दीपं तेऽद्य समर्पये॥ नैवेद्यम्— पुराणप्रवरप्रेम्णा भगवद्रूपदर्शक। नैवेद्यं ते प्रयच्छामि संसारार्णवतारक॥ स्तुतिः— धन्यं भागवतं शास्त्रं यस्मिन्भाति जनार्दन। धन्यास्ते वैष्णवा लोके ये शृण्वन्ति कथामिमाम्॥ यत्र यत्र भवेद् भव्यं शास्त्रं भागवतं कलौ तत्र तत्र हरिर्याति शिष्यै सार्धं च नारद॥ श्रीमद्भागवतं शास्त्रं विष्णुरूपं यदुच्यते। पादादिजानुपर्यन्तं प्रथमं स्कन्धमुच्यते। उर्वादिकटिपर्यन्तं द्वितीयस्कन्धमेव च॥ तृतीयं नाभिभवैकं वेदैरुक्तं मनोहरम्॥ चतुर्थमुदरं प्रोक्तं पृष्ठं कुक्षिसमन्वितम्॥ तथैव पञ्चमस्कन्धं हृदयं समुदाहृतम्। बाहुद्वयं तथा कण्ठं षष्ठस्कन्धं समुच्यते॥ सर्वलक्षणसंयुक्तं सप्तमं मुखमुच्यते॥ भृकुटी च कपालं च नवमस्कन्धमीर्यते। जीवरूपं च दशमं महाविष्णोः परन्तप॥ सर्वेन्द्रियमनन्ता मन एकादश स्मृतम्। परमात्मस्वरूपञ्च द्वादशस्कन्धमुच्यते॥ एवं सर्वं भागवतं श्रीहरेरङ्गमुच्यते। रसिकास्तद्विजानन्ति नान्येषा यदमत्र हि। श्रीमद्भागवतं नाम पुराणं ब्रह्मसंमतम्॥

१. सुगन्धयुग्राणसुखावहः सदा धूपोऽपि यस्याऽकटुतानुभूयते। मनो यथा त्वच्चरणार्चकानां तं धूपमीशेश समर्पयामि॥ प्रज्वलितं दीपनिधाय पात्रे दशायुतं स्नेहयुतं सुनिर्मलम्। सार्द्धं त्रिवारं विधुमण्डलकृतं गृहाण दीपं भगवन्मयार्पितम्॥ व्यतीतयामं नवनीतमेतद् द्राक्षादिरंभासितशर्करां च। निधाय पर्णे कनकस्य पात्रे दत्तं तु नैवेद्यमिदं गृहाण॥ पोटासुऐलाव दरासिवल्लीदलैर्युतम् श्रीमुखमण्डनार्थम् विहारका तं नवरङ्गगर्भं गृहाण ताम्बूलमिदं मयार्पितम्॥ प्रदक्षिणा॥ ब्रह्माण्डमेतत्तव देहसंस्थितं यतो प्रयासादनुकूलतां व्रजेत्। यतो मुनीन्द्रैः परिवर्तितां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥ मृदङ्गशङ्खझल्लरोसतालवल्लकोस्वनैर्गभीरनाददुन्दुभिध्वनदघटीघटादिभिः। कलिन्दजहुनन्दिनीतरङ्गतुल्यचामरैः प्रसन्नदीपकान्तिभिर्निरञ्जये निरञ्जनम्॥ पुराणमन्त्रकीर्तनैर्मनोहरैश्च नर्तनैर्मुहुर्मुहुर्नृपस्वनैश्च नूपुरस्य सिञ्चितैः। महासुगन्धिधूपकैश्च मेघसारदीपतः प्रसन्नदीपकान्तिभिर्निरञ्जये निरञ्जनम्॥

तदष्टादशसाहस्रं कीर्तितं पापनाशनम्। सुरपादपयोः स्कन्धैः तत् द्वादशभिर्युतः॥ जगत्त्राणाय हरिणा श्रीमद्भागवतं परम्॥ भुवि प्रकटितं गौरि कारुण्येन दयालुना॥ तावत्संसारचक्रेऽस्मिन् भ्राम्यतेऽज्ञानतः पुमान्। यावत्कर्णगतं नास्ति शुकशास्त्रकथाक्षरम्॥

* अथ व्यासपूजनादिकम् *

गन्धम्—श्रीमद्व्यासाय विप्राय सौम्याय शुक रूपिणे। गन्धं समर्पयाम्यद्य नमस्तुभ्यं धरासुर॥ अक्षतान्—पौराणिककथा शुद्धप्रसङ्गामोददायिनम्। श्रोतृणां मानसं तापं हर्त्तारं प्रणताक्षतम्॥ पुष्पम्—हरिगाथामृतानन्ददायिने हृद्यमायिने। व्यासाय माल्यं च यच्छामि ऋतुपुष्पसमन्वितम्॥ यथा परीक्षित्सदसि शुको व्यासः प्रकीर्तितः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् व्यासो भव कृपानिधे। ततः—व्यासाग्रे स्वस्थचित्तः सकुटुम्बो यजमान उपविश्य भागवतपारायणं शृणुयात्। समाप्तौ तु—कुण्डं स्थण्डिलं वा कृत्वा सविधिमण्डलं छायामण्डपं वा कुर्यात्। ततः गणेशपूजनम्, स्वस्तिवाचनम्, षोडशमातृकापूजनम्, नान्दीश्राद्धम्, आचार्यादिवरणम्, अग्निस्थापनम्, ग्रहस्थापनम्, कुशकण्डिकाकरणम्, ग्रहाहुतिं दद्यात्। प्रधानहोमारम्भे तु—‘ॐ नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा’ इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशताहुतिं हुत्वा पुनर्द्वादशमस्कन्धश्लोकैर्जुहुयात्। ततः तर्पणं मार्जनं च कुर्यात्। प्रत्यध्यायान्ते—‘ॐ इदं विष्णुरिति मन्त्रेण सघृतपूगीफलं जुहुयात्। शक्तिश्चेत्सर्वत्र क्षीराहुतिः प्रत्यध्यायं प्रतिस्कन्धं वा। अन्ते पुनर्द्वादशाक्षरमन्त्रेण हुत्वा पूजाद्युत्तराङ्गं सकलं कर्म परिसमाप्य व्यासं हेमसिंहासने स्थापितं पुस्तकं च सम्पूज्य देशकालौ सङ्कीर्त्य—‘मम कायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकज्ञाताज्ञातसमस्तकिल्बिषक्षयपूर्वकश्रीमद्भागवतमहापुराणस्य श्लोकसंख्यावेष्टनपटतन्तुसंख्याऽवच्छिन्न-स्वर्गवासादिसमस्तसुखभोगसिद्धये श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तज्योतिष्टोमातिरात्रादिफलावाप्तये श्रीलक्ष्मीनारायणानुग्रहसंपादनहेतवे अमुकगोत्रायामुकवेदशाखाध्यायिनेऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय इदं श्रीमद्भागवतपुस्तकं विष्णुदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे। दानप्रतिष्ठा—श्रीमद्भागवतपुस्तकदानप्रतिष्ठासाङ्गतासिद्ध्यर्थं हिरण्यमग्निदैवतं तुभ्यमहं सम्प्रददे। एवं दानविधिं समाप्य यथाशक्ति मधुपायसैर्द्वादशब्राह्मणान् भोजयित्वा भूयसीं दद्यात्—कृतेऽस्मिन् सप्ताहादिपारायणकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये। ततः—कृतस्य श्रीमद्भागवतपारायणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्तये च आचार्यादिभ्यो महर्त्विग्भ्यः सूक्तपाठकेभ्यो हवनकर्तृभ्यो देवयजनमागतेभ्यश्च च दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये। गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादायमामिकाम्। इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन। यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥ जपच्छिद्रं तपच्छिद्रं यच्छिद्रं शान्तिकर्मणि। सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः। प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः। त्राहि मां पुण्ड्रीकाक्ष सर्वपापहरो हरिः॥ अज्ञानात् विस्मृतेभ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्। विपरीतं तु तत्सर्वं क्षमस्व परमेश्वर। अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर॥ चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च। हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः॥ काले वर्षतु पर्जन्यः पृथ्वीशस्यशालिनी। देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः॥ सर्वे च सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम। तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर॥ ‘ॐ कृष्णाय नमः—इति द्वादशकृत्वः समुच्चार्य अनेन कर्मणा श्रीयोगीराज १ कृष्ण २ परमेश्वरः ३ प्रीयताम् ४॥

* कामनापरक संकल्पों का संकलन *

(१) अनेकजन्मसञ्चिताखिलदुष्कृतनिवृत्तिपुरस्सरैहिकाध्यात्मादित्रिविधतापकायिकादित्रिविधपापनोदनार्थं दशाश्वमेधयज्ञजन्यपुण्यसम्यगिष्टिराजसूययज्ञसहस्रपुण्य-

समपुण्यचन्द्रसूर्यग्रहणकालिकबहुब्राह्मणसंप्रदानकसर्वसस्यपूर्णसर्वरत्नोपशोभितमहीदानपुण्यप्राप्तये एतत्पुस्तकावस्थिताक्षरसंख्यवर्षसहस्रावच्छिन्नस्वर्गाधिकरणवासतदुत्तरैस्तत्पुस्तका-
वस्थिताध्यायसमसंख्यकल्पवैकुण्ठैश्वर्यानुभवपुरस्सरैतत्पुस्तकस्कन्धसमकल्पकोटिगोलोकवासकामोऽमुकगोत्रामुकप्रवरामुकशर्मब्राह्मणवदनारविन्दाच्छ्रीकृष्णवाङ्मयमूर्तीभूतं
श्रीमद्भागवतमष्टादशपुराणप्रकृतिभूतं श्रीगोविन्दप्रीत्याविर्भावकामोऽनेकश्रोतृश्रावणपूर्वकं यथासंभवदिनाद्यैः श्रोष्यामि। (२) सन्ततीच्छया श्रवणे— अतीतानन्तजन्मसंपादितदुष्कृतपरिपाक-
वशाप्राप्तजन्माङ्गचक्रक्रूरग्रहसूचितपत्नीवन्ध्यात्वकाकबन्ध्यात्वमृतवत्सात्वत्सवद्गर्भत्वादिरूपसन्ततिप्रतिबन्धकदोषनिवृत्तिकामः। (३) सद्गतीच्छया—स्वीयानन्तदुष्कृतपरिपाकवशाप्त-
नानाविधिदुःखक्षेत्रयोनीनां पितृणामन्यस्य वा कस्यचित्प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकस्वर्गादिलोकप्राप्तिः। (४) रोगनिवृत्त्यर्थं तु—प्राग्जन्मकृतब्रह्महत्यादिकोपलब्धयक्ष्मादिरोगनिवृत्त्यर्थम्।
(५) ग्रहाघरिष्टत्वे—जन्मपत्राद्यनुसारेण वर्षमासदिनविचारनवशैः दशाविदशोपदशासुविषमस्थानस्थग्रहजन्यदुष्टफलदूरीकरणपूर्वकशुभस्थानस्थग्रहजन्यसत्फलावाप्तिकामः। (६)
राजा तु—राज्याश्वगोशालादिसमृद्धिपुरस्सरमुद्गगोधूमब्रीहियवचणकाद्यन्नस्वर्णरूप्यमणिमुक्तादिरत्नाढ्यकोशसमृद्धिपूर्वकषड्गुणसप्तप्रकृतित्रिशक्तिसंयुतात्मनः कल्याणार्थं
शत्रुजयलब्धातीवयशोधाराप्रजापालनाद्यनेकगुणावाप्त्यर्थं च। देखिये— वंशीधरी भागवत।

* अथ द्रव्यदेवताः *

अभयं सर्वदैवत्यं भूमिर्वै विष्णुदेवता कन्यादासस्तथा दासी प्राजापत्याः प्रकीर्तिताः। प्राजापत्यो गजः प्रोक्तस्तुरगो यमदेवतः। तथा चैकशफं सर्वं कथितं यमदैवतम्। महिषश्च
तथा याम्य उष्ट्रो वै नैर्ऋतो भवेत्। रौद्री धेनुर्विनिर्दिष्टा छागमाग्नेयमादिशेत्। मेघं तु वारुणं विद्याद् वराहं वैष्णवं तथा। आरण्याः पशवः सर्वे कथिता वायुदेवताः। जलाशयानि
सर्वाणि वारीधानी कमण्डलुम्। कुम्भं च करकं चैव वरुणानि निबोधत। समुद्रजानि रत्नानि वारुणानि द्विजोत्तमाः। आग्नेयं कनकं प्रोक्तं सर्वलोहानि चाप्यथ। प्राजापत्यानि स
यानि पक्वान्नमपि च द्विजाः। ज्ञेयाश्च सर्वगन्धास्तु गान्धर्वा वै विचक्षणैः। बार्हस्पत्यं स्मृतं वासः सौम्याः ज्ञेया रसास्तथा। पक्षिणस्तु तथा सर्वे वायव्याः परिकीर्तिताः। विद्या ब्राह्मी
विनिर्दिष्टा विद्योपकरणानि च। सारस्वतानि ज्ञेयानि पुस्तकादीनि पण्डितैः। सर्वेषां शिल्पिभाण्डानां विश्वकर्मा तु दैवतम्। द्रुमाणामथ पुष्पाणां शाकैर्हरितकैः सह। फलानामपि
सर्वेषां ज्ञेयो देवो वनस्पतिः। मत्स्यमांसे विनिर्दिष्टे प्राजापत्ये गजस्तथा। छत्रं कृष्णाजिनं शय्यां रथमासनमेव च। उपानहौ तथा यानं यच्चान्यत्राणिवर्जितम्। सर्वमाङ्गिरसत्वेन
प्रतिगृहीतमानवः। शूरोपयोगि यत्सर्वं विज्ञेयं सर्वं (विश्वं) दैवतम्। गृहं च शुक्रदैवत्यं (सर्वदैवत्यं) यदनुक्तं द्विजोत्तमाः। तत्ज्ञेयं विष्णुदैवत्यं सर्वं वा द्विजसत्तम।

श्रीमद्भागवतं पुराणममलं यत् वैष्णवानां धनम्, श्रीरूपेशप्रकाशितं सुललितं यस्मिन् हरिः गीयते।
श्रीमद्विद्याधरात्मजः श्रुतिधरः यो विदुषां चूडामणिः, श्रीविश्वेशप्रसादनाय रचिता टीका सरस्वती शुभा॥

(भागवत के पठन का नियम)

श्रीमद्भागवतं यस्तु पठते कृष्णसन्निधौ। कुलकोटिशतैर्युक्तः क्रीडते योगिभिः सदा॥

(भागवतशास्त्र के सान्निध्य में कृष्ण का अनमोल निवास)

यत्र भागवतं शास्त्रं यत्र जागरणं हरेः। शालग्रामशिला यत्र तत्र गच्छेद्भरिः स्वयम्॥

(कलियुग में भागवत पुराण की कथा अत्यावश्यक)

नैव भागवतं यत्र पुराणं गीयते कलौ। अन्धकूपेषु क्षिप्यन्ते ज्वलितेषु हुताशने॥

(भागवत की निन्दा से यमदूतों का ताड़न)

द्विषन्ति ये भागवतं न कुर्वन्ति दिनं हरे। यमदूतैश्च नीयन्ते तथा भूमौ भवन्ति ते॥

(वैशाख मास में भागवत श्रवण से ब्रह्मत्व की प्राप्ति)

श्लोकार्थं श्लोकपादं वा नित्यं भागवतोद्भवम्। वैशाखे च पठन्मर्त्यो ब्रह्मत्वमुपपद्यते॥

यो वै भागवतं शास्त्रं शृणोत्येतद्दिनत्रये। न पापैर्लिप्यते क्वापि पद्मपत्रमिवाम्भसा॥

देवत्वं मनुजैः प्राप्तं कैश्चित्संसिद्धमेव च। कैश्चित्प्राप्तो ब्रह्मभावो दिनत्रयनिषेवणात्॥

(सब पुराणों में भागवत का ही श्रेष्ठत्वकथन)

पुराणं वैष्णवं मास्त्यं कौर्म भागवतं तथा। आदित्यं गारुडं स्कान्दं मार्कण्डेयतथाष्टमम्॥

ब्रह्मब्रह्माण्डलिङ्गं च ब्रह्मवैवर्तमेव च। भविष्योत्तरमाग्नेयं पाद्मं वामनमेव च॥

सप्तदशं तु वायव्यमिदमष्टादशं स्मृतम्। सर्वेष्वपि पुराणेषु श्रेष्ठं भागवतं स्मृतम्॥

(शरीर के अनेकावस्था में पुराण श्रवण से स्वमनोरथ सिद्धि का लाभ)

मातृहा मद्यपी कुष्ठी स्तेयी विश्वासघातकः। ते सर्वे प्रतिमुच्यन्ते पुराणश्रवणात्कलौ॥

पुराणश्रवणं कार्यं बालवृद्धातुरैरपि। निष्कामैश्च सकामैश्च उत्तमाधममध्यमैः॥

पुराणश्रवणं कार्यं स्त्रीशूद्रैः पतितैरपि। तत्तत्फलमवाप्नोति यथा मनसि सुनिश्चितम्॥

अकामेन सकामेन आस्थया वाप्यनास्थया। स्पर्धया कपटेनापि निस्पृहेन स्पृहावता॥

पुराणश्रवणेनैव प्राप्नुवन्ति मनोरथान्।

(पुस्तकादि के प्रतिग्रह का प्रायश्चित्त)

शास्त्रं पुराणं काव्यञ्च स्मृतिं नाटकमेव वा। दद्याद्वा पुण्यकालेषु व्यतीपाते च वैधृतौ॥

द्विजायाऽध्यात्मविदुषे फलकं बाह्यलेखकम्। सप्तजन्मसु विद्वान् स्यात्सर्वशास्त्रार्थतत्त्ववित्॥

पुराणं धर्मशास्त्रञ्च स्मृतिं काव्यं सनाटकम्। पुण्यकालेषु संक्रान्तौ ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः॥

यो दद्याद् विप्रवर्याय स भवेत् सर्वशास्त्रवित्। द्विजो यः प्रतिगृह्णाति द्रव्यलोभात्सरस्वतीम्॥

सोऽपि जन्मान्तरे राजन्! विद्यावान् संप्रजायते। प्रतिग्रहधनार्द्धं तु विक्रयित्वाऽऽत्मजीवनम्॥
कुर्याद्यदि स पापात्मा प्राजापत्यत्रयं चरेत्। उपोष्य रजनीमेकां पञ्चगव्यं पिबेच्छुचिः॥

अन्यथा दोषमाप्नोति ब्राह्म्यो भवति भूतले।

(श्रीशुकोक्त भागवत के पाठ से भगवान् को वशीकरण करना)

पूजानिच्छिद्रतावाप्त्यै विष्णोर्भागवतं मुने। पुराणं श्रीशुकेनोक्तं गङ्गायां यत्परीक्षिते॥

तन्नित्यं वाचयेत्किञ्चित्तेन प्रीतो जनार्दनः। द्वात्रिंशदपराधांश्च क्षमते नात्र संशयः॥

श्रीकृष्णपूजासंपूर्तिर्विनाभागवतं न हि। विनापि श्री हरेः पूजां श्रीमद्भागवतपाठतः॥

सांगपूजाफलं नित्यं जायते नात्र संशयः। कृष्णस्य वाङ्मयीमूर्तिः श्रीमद्भागवते मुने॥

पूजासमाप्तिर्नैव स्याच्छ्रीमद्भागवती कथाम्। विना भार्गव विप्रेन्द्र श्रीगोपालपतेर्विभो॥

न्यूनापि पूर्तिमाप्नोति श्रीमद्भागवतध्वनेः। पूर्णापि पूजाहीना स्याद्विना पारीक्षिती कथाम्॥

(भगवान् श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों के उदर से उत्पन्न हुए पुत्रों के नाम)

- (१) प्रद्युम्न, चारुदेष्ण, सुदेष्ण; चारुदेह, सुचारु, चारुगुप्त, भद्रचारु, चन्द्रचारु, विचारु और चारु ये दस पुत्र रुक्मिणी पटरानी से पैदा हुए।
- (२) साम्ब, सुमित्र, पुरजित्, शतजित्, सहस्रजित्, विजय, चित्रकेतु, वसुमान्, द्रविड और क्रतु ये दस पुत्र जाम्बवती पटरानी से उत्पन्न हुए।
- (३) भानु, सुभानु, स्वर्भानु, प्रभानु, भानुमान्, चन्द्रभानु, बृहद्भानु, रतिभानु, श्रीभानु और प्रतिभानु ये दस पुत्र सत्यभामा से उत्पन्न हुए।
- (४) श्रुत, कवि, वृष, वीर, सुबाहु, भद्र, शान्ति, दर्श, पूर्णमास और सोमक ये दस पुत्र कालिन्दी से हुए।
- (५) वीर, चन्द्र, अश्वसेन, चित्र, वेगवान्, वृष, आम, शंकु, वसु और कुन्ति ये दस पुत्र नाग्नजिती से हुए।
- (६) वृक, हर्ष, अनिल, गृध, वर्द्धन, अन्नाद, महाश, पवन, वह्नि और क्षुधि ये दस पुत्र मित्रविन्दा से हुए।
- (७) संग्रामजित्, बृहत्सेन, शूर, प्रहरण, अरिजित्, जय, सुभद्र, वाम, आयु और सत्यक ये भद्रा से उत्पन्न हुए।
- (८) प्रघोष, गोत्रवान्, सिंह, बल, प्रबल, ऊर्ध्वग, महाशक्ति, सह, ओज और अपराजित् ये दस पुत्र लक्ष्मणा से हुए।

— दौलतराम गौड वेदाचार्य

श्रीमद्भागवतश्रवणविधानम्—

शतं भोज्यं प्रतिस्कन्धं स्वर्णं दद्याद्यथावसु । श्रुते सिद्धं सुवर्णस्य पलमानस्य साम्बरम् ॥१॥ आचार्याय सुधीर्दत्त्वा मुक्तः स्याद्भवबन्धनैः । गायत्र्या हवनं कार्यं पायसेनाऽऽज्यतस्तथा ॥२॥ तिलव्रीहिभिरेवात्र मता व्याहृतयो यजौ । होमान्ते भगवान्विष्णुः पूज्यः स्वर्णमयः शुभैः ॥३॥ उपचारैः षोडशभिर्मन्त्रैः पौरुषसम्भवैः । ततश्च धेनुदानं च वक्त्रे देयं प्रयत्नतः ॥४॥ एवं कृते विधाने च सर्वपापनिवारणम् । फलदं स्यात्पुराणं तु श्रीमद्भागवतं शुभम् ॥५॥ धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनं नात्र संशयः । अर्थवादान्वदन्त्येव पुराणानि च केचन ॥६॥ न तथा भारतं सम्यक्छुतं भागवतं जनैः । विधानसहितं सम्यक् पुराणफलदं भवेत् । तस्माद्विधानयुक्तं तु पुराणं शृणुयान्नरः ॥७॥ (विधानमाला पृष्ठ २२५ से उद्धृत) ।

सङ्कल्पः—पश्चिमदिक्स्थदेहलीविनायकपूर्वदिक्स्थकालविनायकयोरन्तःस्थितसोमसूर्यान्वयभूभृत्प्रतिष्ठितासंख्यातलिङ्गोपेतायां पञ्चविंशतिक्रोशमितपञ्चकोशीस्थितानेकलिङ्गैरनेकगणैरनेकगौरीभिश्चाभिरक्षितायाम् एकयोजनस्वर्गभूम्यावेष्टितमध्यमेश्वरमारभ्य देहलीविनायकपर्यन्तं सूत्रभ्रामणेन संजातरेखामध्यवर्तिनि पूर्वस्मिन् गङ्गापारे कालाक्षरण भद्रकालेय-कालकल्पनाभिधगणचतुष्टयाभिरक्षितायां दक्षिणेऽसीधाराव्यवस्थितकर्दमलिप्तविग्रहवीरभद्रनभः स्थूलकर्णमहाबाहुपरिरक्षितायाम् पश्चिमे देहलीपार्श्वस्थितविशालाक्षी-महाभीम कुण्डोदर-महोदराभिरक्षितायाम् उत्तरे वरणापार्श्वस्थितनन्दी-शोण-पञ्चालखरपादकरण्डजेरानन्दगोपिकाभिरभिरक्षितायाम् प्रथमप्रदक्षिणे मणिकर्णिकेश्वरादिपञ्चत्रिंशता, द्वितीयप्रदक्षिणे त्रिसन्ध्येश्वरादिदशभिः, तृतीयप्रदक्षिणे चण्डेश्वरादितिसृभिः, चतुर्थप्रदक्षिणे राजराजेश्वरादितिसृभिः, पञ्चमप्रदक्षिणे परेश्वरादि चतसृभिः, षष्ठप्रदक्षिणे मार्कण्डेयेश्वरादि द्वाभ्याम्, सप्तमप्रदक्षिणे गङ्गेश्वरादि पञ्चदशभिर्देवताभिर्विराजितायाम् पूर्वादिक्रमेण प्रतिद्वारं मणिकर्णिकेश्वरब्रह्मेश्वरगोकर्णेश्वरभारभूतेश्वरैर्विराजितायाम् तुण्डवक्त्रभीषण-शङ्खकर्णपिचण्डलगणैरभिरक्षितायाम् सोमेश्वरवायुकोणस्थायोद्ध्याक्षेत्र-उत्तरार्कादिवरणापर्यन्तस्थितमथुराक्षेत्र-असीसंभेदकोणस्थगङ्गाद्वारक्षेत्र-बिन्दुमाधवादिकृत्तिवासेश्वरान्तकाञ्चीक्षेत्र-वृद्धकालादिकृत्तिवासावधिस्थितावन्तीक्षेत्रशङ्खोद्धारप्रदेशस्थितद्वारावतीक्षेत्रत्रिषट्पुरीविलसितायां कुरुक्षेत्रस्थाण्वीश्वरनैमिषाद्यष्टषष्ट्यायतनाधीशसंसेवितायाम्, ओंकारेश्वरत्रिलोचनेश्वरकेदारेश्वरादिपञ्चाशन्महालिङ्गैः असीसङ्गमपिशाचमोचनकपिलधारामत्स्योदरीगोदावरीविशालवदरिकाश्रमपरशुरामहंसवासुकिनरनारायणरामघण्टाकर्णविष्णुपादोदकभैरवयमकेदारादिशतद्वयतीर्थरादिकेशवहरिकेशवज्ञानकेशवभृगुकेशवगङ्गाकेशवाद्यनेककेशवैः, शेषमाधव-असीमाधवप्रयागमाधवबिन्दुमाधवकालमाधवाद्यनेकमाधवैः, लक्ष्मीनृसिंहज्वालानृसिंहविदारनृसिंहनिर्वाणनृसिंहाद्यनेकनृसिंहैः, आदिवाराहयज्ञवाराहाद्यनेकवाराहैः, अनन्तवामनाद्यनेकवामनैः, पञ्चोत्तरशतनारायणैः एकोत्तरशतजलशायिभिः, त्रिंशत्कमठमूर्तिभिः, विंशतिमत्स्यमूर्तिभिः, अष्टोत्तरशतगोपालमूर्तिभिः, असंख्यातबुद्धमूर्तिभिः, त्रिंशत्परशुराममूर्तिभिः, एकोत्तरशतरघुनाथमूर्तिभिः, एकोनपञ्चाशद्राममूर्तिभिः, गन्धर्वसागर-सिन्धुसागरगङ्गासागरसप्तसागरपूर्वसागरेश्वरादिसागरैः, अत्रीश्वरादिसप्तर्षिलिङ्गैः, सनकेश्वरादिमहायोगीश्वरैः, शङ्खकर्णेश्वरादिगणलिङ्गैः, धुन्धुमारेश्वरादिराजर्षिलिङ्गैः, कपालमोचनदुर्गालक्ष्मीमातृपितृमरीचिकुण्डादिकुण्डैः, ज्येष्ठवापीज्ञानवाप्यादिवापिभिः, चन्द्रकूपधर्मकूपव्यासकूपकालकूपादिकूपैः, मुक्तिमण्डपशृङ्गारमण्डपकैलासमण्डपवैराग्यमण्ड-पऐश्वर्यमण्डपज्ञानमण्डपहरिश्चन्द्रमण्डपमोक्षलक्ष्मीविलासादिमण्डपैः, असिताङ्गभैरवाद्यष्ट-भैरवैः कालभैरवादिभिश्च संरक्षितायाम् आदित्येश्वरादिनवग्रहेश्वरैः, दक्षेश्वराद्यष्टलिङ्गैः, आग्नीध्रेश्वराद्येकादशमहालिङ्गैः, मुखनिर्मालिकागौरीमङ्गलागौर्यादिनवगौरीभिः, मणिकर्णिकाद्यष्टादशोत्तरशतपञ्चकोशीयात्रादेवताभिः, रुद्रसरोवरयूपसरोवरमानससरोवरादिसरोवरैः, मध्याह्नस्नानार्थसमागतैरनेककोटिसंख्यैर्देवर्षिभृतिभिः संसेवितायां वाराणस्याम् राधाकृष्णस्य प्रसादसिद्ध्यर्थं भगवतः श्रीकृष्णचन्द्रस्य प्रसादेन सर्वेषां भारतीयानां जनानां वर्तमानपीडोपद्रवदीनतापरमुखनिरीक्षणादिपरित्यागपूर्वकं क्षेमस्थैर्यवीर्यविजयायुरारोग्यैश्वर्यवृद्ध्यर्थं तथा च यथा शक्ति कायेन मनसा वाचा धनेन साहाय्यमाचरतामास्तिकशिरोमणीनां श्रेष्ठवर्याणां तदितरेषां च गृहे वसतां द्विपदां चतुष्पदां च निरोगनिरुपद्रवादिसर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थम् इतोऽपि महदैश्वर्यावाप्त्यर्थं प्रतिष्ठाद्यैहिकामुष्मिकस्वर्गादिब्रह्मकल्पान्तफलप्राप्त्यर्थम् उपचीयमान-अधर्मनिवृत्तिपुरःसरं धर्माभिवृद्ध्यर्थं समेषां प्राणिनां सद्भावनोत्पादनार्थं विश्वकल्याणार्थं समस्तमङ्गलावाप्त्यर्थम् श्रीकृष्णचरणारविन्दयोः अचञ्चलभक्तिसिद्ध्यर्थम् अष्टोत्तरशतसंख्याकश्रीमद्भागवतपारायणं सप्ताहविधिना ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये ।

प्रत्येक मन्वन्तर के व्यासों का नाम

यस्मिन् मन्वन्तरे व्यासा ये ये तांस्तान् निबोध मे। यथा च भेदः शाखानां व्यासेन क्रियते मुने ! ॥
अष्टाविंशतिकृत्वो वै वेदा व्यस्ता महर्षिभिः। वैवस्वतेऽन्तरे त्वस्मिन् द्वापरेषु पुनः पुनः ॥
वेदव्यासा व्यतीता ये अष्टाविंशतिसत्तमाः। चतुर्धा यैः कृतो वेदो द्वापरेषु पुनः पुनः ॥
द्वापरे प्रथमे व्यस्ताः स्वयं वेदाः स्वयंभुवा। द्वितीये द्वापरे चैव वेदव्यासः प्रजापतिः ॥
तृतीये चोशना व्यासः चतुर्थे तु बृहस्पतिः। सविता पञ्चमे व्यासो मृत्युः षष्ठे स्मृतः प्रभुः ॥
सप्तमे च तथैवेन्द्रो वसिष्ठश्चाष्टमे स्मृतः। सारस्वतश्च नवमे त्रिधामा दशमे स्मृतः ॥
एकादशे च त्रिवृषो भरद्वाजस्ततः परम्। त्रयोदशे चान्तरिक्षो धर्मो चापि चतुर्दशे ॥
तथारुणः पञ्चदशे षोडशे तु धनञ्जयः। कृतञ्जयः सप्तदशे ऋणज्याष्टादशे स्मृतः ॥
ततो व्यासो भरद्वाजो भरद्वाजात्तु गौतमः। गौतमादुत्तरं व्यासो हर्ष्यात्मा योऽभिधीयते ॥
तस्मादस्मत् पिता शक्तिः व्यासस्तस्मादह (पराशरः) मुने। जातूकर्णोऽभवन्मत्तः (पराशरादनन्तरम्)
कृष्णद्वैपायनस्ततः। (ततो जातूकर्णात्परमअष्टाविंशतिमे युगे)।
अष्टाविंशतिरित्येते वेदव्यासाः पुरातनाः। एको वेदश्चतुर्धा तु तैः कृतो द्वापरादिषु ॥
भविष्ये द्वापरे चैव द्रोणिर्व्यासो भविष्यति। व्यतीते मम पुत्रेऽस्मिन् कृष्णद्वैपायने मुने ॥

पुराण की कुछ झलक

नमस्कृत्य पुराणज्ञं दद्याच्चार्घासनं ततः। निषीद तत्र चेत्युक्त्वा गन्धपुष्पैः समर्चयेत् ॥
आत्मयोग्यं च ताम्बूलमधिकं वा समर्चयेत्। ब्रूहि पुण्यकथां ब्रह्मन्यौराणिकीमितीरयेत् ॥
न खट्वासनमारुह्य नोच्चासनमथापि वा। नोच्चासनो वै शृणुयाद् धर्मकामार्थसिद्धये ॥
शृणोत्युक्त्वा पुराणज्ञं इमं मन्त्रमुदीरयेत्। नमो हरिं हरमयो गणेशं भारती मतः ॥
इष्टदेवं नमस्कृत्वा पुराणं वक्तुमर्हति। श्रोतुश्च तूष्णीं मननं तूष्णीं श्रवणमेव वा ॥
अन्यथा भारती क्रुध्येत्तत्क्रोधान्मूकता भवेत्। तस्मात् पुराणश्रोता च ताम्बूलादिसमर्पणम् ॥
वक्तुश्च जीविका कार्या स्वसामर्थ्यानुसारतः। पुराणे प्रक्रमे देयं स चेतोऽहमनीयकम् ॥
सूक्ष्माम्बरमथो वाऽपि वस्त्रद्वितयसमर्पयेत्। आसनं तु महच्चित्रं रम्ममूर्जस्वलं मृदु ॥
सुवर्णं वा तथा दद्याद् गोभूगेहादिकं तथा। एतत्समस्तं विप्रेन्द्रा दक्षिणामूर्तिना पुरा ॥

शङ्करेण मुनेनां हि भाषितं च दिवौकसाम्। अथ ते मुनयः सर्वे तं प्रणम्याऽऽसनस्थितम् ॥
पृथक्-पृथक् च ताम्बूलं दद्यात् शुश्रूषवः स्थिताः। तेनापि कथितं सर्वं पुराणं सर्वसम्पदम् ॥
उपान्ताध्यायपर्यन्तं शृतवन्तो द्विजोत्तमाः। (पद्मपुराण-पातालखण्ड ० अ० १८९)

पुरोहितलक्षणम्

काणं व्यङ्गमपुत्रं वाऽनभिज्ञमजितेन्द्रियम्। न ह्रस्वं व्याधितं वाऽपि नृपः कुर्यात्पुरोहितम् ॥
(कालिकापुराण)

शाकल्यप्रमाणम्

तिलार्धं तण्डुला देयास्तण्डुलार्धं यवास्तथा। यवार्धं शर्कराः प्रोक्ताः सर्वार्द्धं च घृतं स्मृतम् ॥
(आनन्दरामायण)

“आयुः क्षयो यवाधिक्ये यवसाम्ये धनक्षयः। धनधान्यसमृद्धिः स्यात्तिलाधिक्ये न संशयः ॥
त्रिभागाश्च यवाः कार्या भागमेकन्तु तण्डुलाः ॥”

भागवत से रोगादि निवृत्ति

श्रीमद्भागवतं पुण्यमायुरारोग्यपुष्टिदम्। पठनाच्छ्रवणाद्वापि सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

अष्टादश पुराणों का दान

ब्राह्म पाद्मं वैष्णवं च शैवं भागवतं तथा। तथान्यत्रन्नारदीयं च मार्कण्डेयं च सप्तमम् ॥
आग्नेयमष्टमं प्रोक्तं भविष्यं नवमं तथा। दशमं ब्रह्मवैवर्तं लैङ्गमेकादशं तथा ॥
वाराहं द्वादशं प्रोक्तं स्कान्दं चैव त्रयोदशम्। चतुर्दशं वामनं च कौर्म पञ्चदशं तथा ॥
मत्स्यं च गारुडं चैव ब्रह्माण्डमन्तिमं तथा। अन्यान्युपपुराणानि सहिरण्यानि पर्वणि ॥
(वाराहपुराण)

पुस्तकों के दान का प्रकार

शास्त्रसद्भावविदुषे वाचके च प्रियम्बदे। वस्त्रयुग्मेन संवीतं पुस्तकं प्रतिपादयेत् ॥
कपिलादानसहस्रेण सम्यक् दत्तेन यत्फलम्। तत्फलं समवाप्नोति पुस्तकैकप्रदानतः ॥
पुराणं भारतं वापि रामायणमथापि वा। दत्त्वा यत्फलमाप्नोति पार्थ तत्केन वर्ण्यत-इति ॥
(दानमयूख)

-स्व० दौलतराम गौड़

पुराणश्रवणविधि—

सर्वपापविनिर्मुक्तिकरणे यस्य मानसम् । वर्तते विधिवत्तेन पुराणं श्रूयते ध्रुवम् ॥
प्रातःकाले समुत्थाय दन्तधावनपूर्वकम् । प्रातःस्नानं विधायैव जुहुयाज्जातवेदसम् ॥
कृताह्निकं समाहूय वक्तारं शीलकोविदम् । संभाव्याऽऽसनदानेन नमस्कुर्यात्समञ्जसा ॥

‘अम्बरीष शुकप्रोक्तं नित्यं भागवतं शृणु ।

पठ त्वं स्वमुखेनापि यदीच्छसि भव क्षयम् ॥

देशकालौ सङ्कीर्त्य—सकलपातकक्षयपूर्वकमोक्षसिद्ध्यर्थं श्रीमद्भागवतश्रवणं करिष्ये
ॐ सरस्वत्यै नमः—इति गन्धादिभिः पुस्तकं संपूज्य व्यासस्वरूपिणे वाचकाय नमः—
इति वाचकं गन्धादिभिः संपूज्य नमस्ते भगवन्निति श्लोकेन नमस्कृत्य तन्मुखादेकाग्रमनाः
पुराणं शृणुयात्’ इत्याचारेन्दौ।

आचार्य की अलौकिकता पर विचार—

आचार्यादीनामलाभे तद्रूपं पटे लिखित्वा तन्नमस्कृत्य तत्सन्निधौ अन्यं युक्तमाचार्यं
वरयेत्। एकस्मिन् काले बहुकर्मणि प्राप्ते सति आचार्यं प्रणम्य तद्विधिना तत्पुत्रादिभिः
कारयेत्। तदलाभे त्वाचार्य एव तन्नयित्वा करोतीति विज्ञायते। (विमानार्चनाकल्प)

संभार द्वारा ही भगवान् के पूजन से लाभ—

सर्पं दृष्ट्वा तथा कार्यं कम्पते च मुहुर्मुहुः। अमन्त्रमर्चकं दृष्ट्वा तथा भीतो जनार्दनः ॥
गन्धहीने भयोत्पत्तिः पुष्पहीने तु संकलम्। नैवेद्यहीने दुर्भिक्षं मरणं मन्त्रहीनके ॥
अमन्त्रमविधिं चैवमकालं चैव पूजनम्। नित्यं राष्ट्रभयं कुर्यात्तद् ग्रामं तु विनश्यति ॥
अमन्त्रेणैव यत्पूज्यं पिशाचासुरवर्धनम्। व्याधितस्करदोषौ च अनावृष्टिमहद्भयम् ॥

(पञ्चरात्ररक्षा)

अकारण उन्मत्त यादवों को शाप का भीषण रूप—

व्यास उवाच— विश्वामित्रस्तथा कण्वो नारदश्च महामुनिः। पिण्डारके महातीर्थे
दृष्ट्वा यदुकुमारकैः ॥ यौवनोन्मत्ता भाविकार्यप्रचोदिताः। साम्बं जाम्बवतीपुत्रं भूषयित्वा
स्त्रियं यथा ॥ प्रभूतास्तान्मुनीनूचुः प्रणिपातपुरःसरम्।

कुमारा ऊचुः— इयं स्त्री पुत्रकामा तु प्रभो किं जनयिष्यति।

व्यास उवाच— दिव्यज्ञानोपपन्नास्ते विप्रलब्धा कुमारकैः। शापं ददुस्तदा विप्रास्तेषां
नाशाय सुव्रताः ॥ मुनयः कुपिता प्रोचुर्मुसलं जनयिष्यति। येनाखिलकुलोत्सादो यादवानां
भविष्यति ॥ प्रद्युम्नसाम्बप्रमुखाः कृतवर्माऽथ सात्यकिः ॥ अनिरुद्धादयश्चान्ये पृथुविष्टथुरेव
च ॥ चारुधर्मा सुचारुश्च तथाऽक्रूरादयो द्विजाः। एरकारूपीभिर्वज्रैस्ते निजघ्नुः परस्परम् ॥

(पद्मपुराण अ० २१०)

अकारण उत्पात में शान्ति—

मण्डपस्य तथा भित्तिश्चूडादेवकुलस्य च। अकस्मान्निपतेद्यत्र कम्पते वाऽनिमित्ततः ॥
दधिक्षौद्रघृताक्तानामवश्यं समिधां ततः। जुहुयाद्वै अष्टशतमिमारुद्रेति मन्त्रवित् ॥
धेनुश्च दक्षिणां दद्यात्तिलपात्रं सकाञ्चनम् ॥

पवित्रे पतिते ज्ञाते तथा जपमणावपि। प्राणायामत्रयं कृत्वा स्नात्वा विप्रोऽघमर्षणम् ॥

वैदिक ब्राह्मण का ही होतृत्व में अधिकार—

होता चेन्मन्त्रहीनः स्यादशुचिर्भवते सदा। तस्मात्त्वं संस्कृते वह्नौ न होतव्यमवैदिकैः ॥
समन्त्र वैदिकहोतारः आप्यायन्ति देवताः। अवैदिकास्तु होतारो नैव प्रीणन्ति वै सुरान् ॥

यन्त्र पर विचार—

सुवर्णरचितं यन्त्रं सर्वराजवशं करम्। रजतेन कृतं यन्त्रमायुरारोग्यकादम् ॥
ताम्रे तु रचितं यन्त्रं सर्वैश्वर्यप्रदं मतम्। क्लृप्तं मरकते यन्त्रं सर्वशत्रुक्षयशानम् ॥
लोहत्रयोद्धवं यन्त्रं सर्वसिद्धिकरं महत्।

—स्व. दौलत राम गौड़

— वेद प्रकाश गौड़